GREATER NOIDA

JOURNALIST PRESS CLUB

वार्षिकांक 2026

मुक्त स्वर

योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

YEIDA

THE FUTURE IS HERE

नंद गोपाल गुप्ता 'नंदी'
माननीय औद्योगिक विकास मंत्री, उत्तर प्रदेश

वर्तमान कनेक्टिविटी:

- 8 लेन एक्सेस कंट्रोल यमुना एक्सप्रेसवे
- ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे: इंटरचेंज के जरिए यमुना एक्सप्रेसवे से सीधा कनेक्शन
- यमुना इंटरचेंज के माध्यम से नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट, जेवर से सीधा कनेक्शन
- नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के एयर कार्गो के लिए डेडिकेटेड नॉर्थ और ईस्ट एक्सेस रोड

प्रस्तावित कनेक्टिविटी

- आगामी नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट, जेवर
- गंगा एक्सप्रेसवे व एनएच-34 से येडा सेक्टर्स तथा यमुना एक्सप्रेसवे को जोड़ने हेतु प्रस्तावित कनेक्टिविटी लिंक
- यमुना अथॉरिटी के सेक्टर्स और नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को दिल्ली से जोड़ने वाली प्रस्तावित आरआरटीएस कनेक्टिविटी
- दिल्ली–हावड़ा एवं दिल्ली–मुंबई मुख्य रेल मार्ग से येडा के औद्योगिक सेक्टर और नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को जोड़ने वाली प्रस्तावित रेल कनेक्टिविटी
- प्रस्तावित दिल्ली–वाराणसी हाई स्पीड रेल — नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट टर्मिनल पर स्टेशन, दिल्ली से सिर्फ 21 मिनट की दूरी

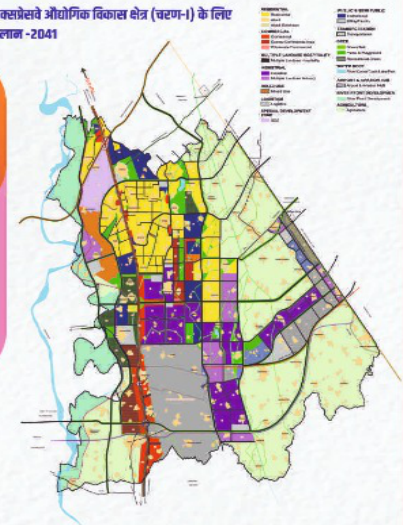

औद्योगिक निवेश के नए आयाम – प्रमुख आकर्षण

- **मेडिकल डिवाइस पार्क:** स्वास्थ्य तकनीक में आत्मनिर्भरता
- **इंडस्ट्रियल पार्क:** विनिर्माण और नवाचार का केंद्र
- **इंटरनेशनल फिल्म सिटी:** वैश्विक मीडिया और मनोरंजन हब
- **डाटा सेंटर पार्क:** डिजिटल इंडिया की मजबूत नींव
- **लॉजिस्टिक्स पार्क:** सुगम आपूर्ति श्रृंखला समाधान
- **टॉय पार्क एवं अपैरल पार्क:** MSME और निर्यात को बढ़ावा
- **इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर:** मेक इन इंडिया को मजबूती
- **सेमीकंडक्टर पार्क:** उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स का भविष्य
- **फिनटेक पार्क:** नई पीढ़ी की वित्तीय तकनीक

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

(उत्तर प्रदेश सरकार का उपक्रम)
प्रथम तल, कॉमर्शियल कॉपलेक्स, पी-2, सैक्टर ओमेगा-1, ग्रेटर नोएडा-201308, जनपद-गौतमबुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश)
वेबसाईट: www.yamunaexpresswayauthority.com, पूछताछ के लिए: industry@yamunaexpresswayauthority.com

Corporate Ad Option-1 / Prayas

अंदर के पेजों में

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में गौतम बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता 05

के-पॉप से के-ड्रामा तक: भारतीय बच्चों के बीच कोरियाई संस्कृति की लोकप्रियता 08

डिजिटल शोर के बीच, मौन की तलाश 09

प्रभावी संवाद मात-पिता व बच्चो के बींच परस्पर प्रेम की नींव 12

भाषाओं की आवश्यकता और अवसर 14

कंक्रीट के जंगल में घुटती साँसें 16

बारूद के ढेर पर दुनिया 17

मीडिया प्रशासनिक अधिकारियों में सामंजस्य जरूरी 18

कचरे का सही निस्तारण : जनस्वास्थ्य की पहली शर्त 20

एप्सटिन फाइल्स : शर्म, सन्नाटा और हमारी सामूहिक विफलता 22

पत्रकार की सुरक्षा और सम्मान: एक अनकही ज़रूरत 24

नेता बनना है तो... पत्रकारिता का सम्मान करो 26

A I (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)शक्ति क्या है? 27

मुंह से निकली दवा: शब्द कैसे हमारे मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं । 28

संघर्ष के दिनों में साथ: सफलता से पहले मिलने वाला भरोसा ही असली ताकत है 28

धर्म और देशभक्ति : इंसानियत से वतन तक 30

दिल्ली-एनसीआर में बढ़ता वायु प्रदूषण: 'गैस चैंबर' की ओर बढ़ते कदम? 32

आधी रोटी, लाल कमल - सब कुछ लाल हो जाएगा 34

AI की एंट्री से क्रांति या खतरा? 36

गौतम बुद्ध नगर विकास का ग्लोबल मॉडल या किसानों की अधूरी दास्तान? 38

A I (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)शक्ति क्या है? 41

जल संरक्षण जल ही जीवन है 42

बुजुर्ग, बच्चे और लापरवाही का दंश, तरक़्क़ी के शोर में दबती इंसानियत 44

भारत के दो चेहरे – इंडिया और भारत 46

भारत कैसे बनेगा विश्वगुरू 48

तरक्की की दौड़ में पीछे छूटता इंसान 50

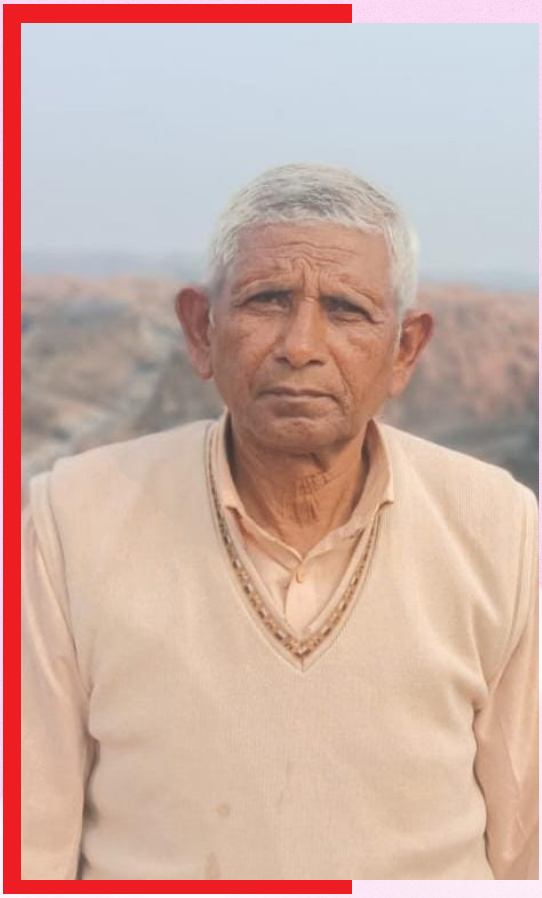

साहित्य सृजन: समाज का धर्म

संपादकीय

शीशपाल सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

साहित्य केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि संवेदना, विचार और चेतना का वह प्रवाह है जो समाज को दिशा देता है। यही कारण है कि साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। साहित्यकार का दायित्व केवल रचना करना नहीं, बल्कि शाश्वत चिंतन के साथ ऐसा कालजयी और सकारात्मक साहित्य रचना है, जो देश और समाज के लिए हितकारी हो तथा नकारात्मकता का नाश करे।

साहित्य सृजन आत्ममुग्धता नहीं, बल्कि समाजोपयोगी होने का भाव है। आज आवश्यकता है कि साहित्य के नाम पर आत्म-प्रवचन और दिखावटी विचारों से ऊपर उठकर सत्य को स्वीकार किया जाए। अश्व-दृग पट्टी समान दृष्टिकोण को हटाकर निरावृत दृष्टि से बोधि-जागृति की ओर बढ़ा जाए। सनातन मूल्यों से संस्कारित साहित्य ही समाज को सही दिशा दे सकता है। यह प्रयास साहित्य को समाज से जोड़ने और रचनात्मक विमर्श को सशक्त बनाने की दिशा में एक सार्थक कदम है। परिष्करण एक अनवरत प्रक्रिया है और यह तभी संभव है जब पाठकों की प्रतिक्रिया का पुनीत प्रसाद मिले। साहित्य तभी जीवंत रहता है, जब वह संवाद स्थापित करे और समाज के प्रश्नों से टकराने का साहस रखे।

इसी क्रम में पत्रकारिता से जुड़े विषय—पत्रकारिता सामाजिक दर्पण, पत्रकारिता एक मिशन, पत्रकारिता पर समाज का भरोसा, पत्रकारिता में फैलती खामियां और पत्रकारिता की आड़ में भटकते कदम—आज के समय में गहन चिंतन की मांग करते हैं। साहित्य और पत्रकारिता, दोनों ही समाज के प्रति उत्तरदायी हैं। इनका उद्देश्य सत्य, संवेदना और सकारात्मक परिवर्तन को स्थापित करना होना चाहिए।

पत्रिका में प्रकाशित सभी सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। प्रशासन का तात्पर्य ये नहीं है कि इन तथ्यों और सामग्री की मौलिकता, विधिकता और प्रभावों से संपादक, ग्रेटर नोएडा जर्नलिस्ट प्रेस क्लब या प्रशासन समिति सहमत है। किसी भी प्रश्न विवाद एवं समीक्षा के लिए लेखक स्वतः जिम्मेदार होंगे।

www.gnpressclub.com | gnpressclub@gmail.com | @gnpressclub

मुक्त स्वर: सच कहने की ज़िद

नरेंद्र भाटी
अध्यक्ष
ग्रेटर नोएडा जर्नलिस्ट प्रेस क्लब

ग्रेटर नोएडा जर्नलिस्ट प्रेस क्लब की वार्षिक पत्रिका 'मुक्त स्वर' के तीसरे अंक के प्रकाशन पर सभी पाठकों, लेखकों और सहयोगियों को हार्दिक बधाई। आपका विश्वास ही हमारी प्रेरणा है। आइए, हम सब मिलकर सच की इस आवाज़ को और मजबूत करें—क्योंकि जब स्वर मुक्त होता है, तभी समाज जागृत होता है।

लोकतंत्र की ताकत उसकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में निहित है, और पत्रकारिता उसी स्वतंत्रता की सशक्त आवाज़ है। 'मुक्त स्वर' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि सच को निर्भीकता से सामने रखने का संकल्प है। यह मंच सवाल पूछने, संवाद स्थापित करने और समाज को आईना दिखाने की जिम्मेदारी निभाता है।

आज जब सूचना के शोर और विभिन्न दबावों के बीच निष्पक्षता बनाए रखना चुनौती बन गया है, ऐसे समय में 'मुक्त स्वर' अपने मूल्यों पर अडिग रहने का प्रयास है। यह पत्रिका पत्रकारों के साथ-साथ शिक्षाविदों, प्रशासनिक अधिकारियों और सामाजिक चिंतकों के विचारों को स्थान देकर वैचारिक विविधता को मजबूत करती है।

सच कहने की ज़िद आसान नहीं होती। इसके लिए धैर्य, साहस और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। 'मुक्त स्वर' इसी प्रतिबद्धता के साथ समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का प्रयास करती है तथ्यों के आधार पर, संतुलित दृष्टिकोण के साथ और सकारात्मक बदलाव की भावना से।

मुक्त स्वर के तृतीय वार्षिकांक के लिए आप सभी को बधाई

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में गौतम बुद्ध की शिक्षाओं की

राणा प्रताप सिंह,
कुलपति, गौतम
बुद्ध विश्वविद्यालय

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य, जो तीव्र तकनीकी विकास, पर्यावरणीय संकट, राजनीतिक ध्रुवीकरण, आर्थिक असमानता और मानसिक तनाव से चिह्नित है, में बुद्ध की शिक्षाएँ अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती हैं। यद्यपि ये शिक्षाएँ ईसा पूर्व 6वीं शताब्दी में प्रतिपादित हुईं, किन्तु वे मानव जीवन की शाश्वत समस्याओं को संबोधित करती हैं। जीवन के बाहरी रूप भले बदल गए हों; मोबाइल फ़ोन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वैश्विक बाज़ार; किन्तु मनुष्य की आंतरिक समस्याएँ जैसे भय, चिंता, लोभ, द्वेष और असंतोष आज भी वैसी ही हैं। अतः बौद्ध धर्म केवल प्राचीन युग के लिए नहीं, बल्कि आधुनिक मानवता के लिए भी मार्गदर्शक है। की बाकायदा रणनीति अपनाई जाती है। सूचनाओं की बाढ़, विरोधाभासी दावे, फर्जी ख़बरें और आधे-अधूरे सच- इन सबके जरिये भ्रम पैदा किया जाता है। और भ्रम से निष्क्रियता जन्म लेती है। निष्क्रिय समाज अपराधियों के लिए सबसे सुरक्षित वातावरण होता है। कुछ देशों में माफियाँ माँगी जा रही हैं, कहीं इस्तीफे दिए जा रहे हैं और इन्हें बड़ी उपलब्धि की तरह प्रस्तुत किया जा रहा है। लेकिन माफी तभी मायने रखती है जब उसके साथ जवाबदेही हो-कानूनी कार्रवाई, संपत्ति की जब्ती, नेटवर्क का खुलासा और स्थायी संस्थागत सुधार। केवल चेहरे बदल देने से व्यवस्था नहीं बदलती। इस्तीफा न्याय नहीं है, वह अधिकतम उसकी शुरुआत हो सकता है। इस पूरे परिदृश्य में सबसे अधिक उपेक्षित पक्ष पीड़ितों का है।

व्यक्तिगत उत्तरदायित्व और नैतिक स्वायत्तता

बुद्ध का एक महत्वपूर्ण योगदान व्यक्तिगत उत्तरदायित्व पर बल देना है। बौद्ध धर्म किसी सृष्टिकर्ता ईश्वर की परिकल्पना नहीं करता जो मनुष्य की नियति का निर्धारण करे। बुद्ध ने मनुष्य को अलौकिक बंधनों से मुक्त करते हुए यह उद्घोष किया कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपना स्वामी है। कर्म के सिद्धांत के अनुसार मनुष्य अपने कर्मों का स्वयं उत्तरदायी है।

आज के वैज्ञानिक और लोकतांत्रिक युग में यह सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण है। पर्यावरण संकट, युद्ध, भ्रष्टाचार और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ अंततः मानव के लोभ, द्वेष और अज्ञान से उत्पन्न होती हैं। बुद्ध का संदेश है कि बाहरी परिवर्तन से पहले आंतरिक परिवर्तन आवश्यक है। आत्मसंयम, नैतिक आचरण और सजगता (माइंडफुलनेस) आधुनिक समाज के लिए अनिवार्य मूल्य हैं।

चार आर्य सत्य और दुःख का विश्लेषण

बुद्ध की शिक्षाओं का केंद्र चार आर्य सत्य हैं:

1. दुःख का सत्य (दुःख): जीवन में जन्म, जरा, व्याधि, मृत्यु और वियोग जैसे अनुभव अनिवार्य हैं।

2 .दुःख का कारण: तृष्णा और आसक्ति ही दुःख का मूल कारण हैं।

3. दुःख निरोध: तृष्णा के क्षय से दुःख का अंत संभव है।

4. अष्टांगिक मार्ग: सम्यक दृष्टि से लेकर सम्यक समाधि तक का मार्ग मुक्ति की ओर ले जाता है।

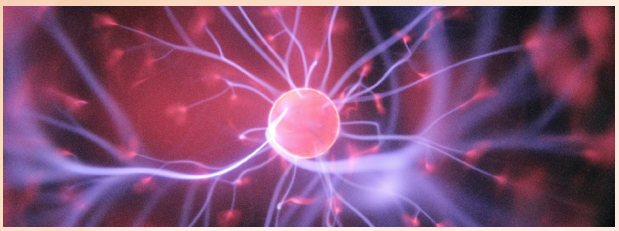

आज का उपभोक्तावादी समाज निरंतर इच्छाओं को बढ़ावा देता है। भौतिक समृद्धि के बावजूद मानसिक शांति का अभाव है। बुद्ध ने बताया कि साधारण सुख अनित्य है और अंततः असंतोष का कारण बन सकता है। आधुनिक पर्यावरण संकट भी असीमित इच्छाओं का परिणाम है। अतः संयम, संतुलन और अनासक्ति की शिक्षा आज वैश्विक स्तर पर अत्यंत आवश्यक है।

बौद्ध मनोविज्ञान और चित्त की समझ

विशेषतः दलाई लामा ने बौद्ध धर्म को तीन भागों बौद्ध विज्ञान, बौद्ध दर्शन और बौद्ध धर्म- में विभाजित कर इसकी आधुनिक उपयोगिता को स्पष्ट किया है। बौद्ध विज्ञान मन और भावनाओं का गहन विश्लेषण करता है। यह बताता है कि क्रोध, ईर्ष्या, भय और मोह मन की मूल प्रकृति नहीं हैं, बल्कि अस्थायी विकार हैं।
आज मानसिक स्वास्थ्य एक वैश्विक चिंता का विषय है। ध्यान और माइंडफुलनेस जैसी बौद्ध साधनाएँ, आधुनिक मनोविज्ञान और चिकित्सा में अपनाई जा रही हैं। ये साधनाएँ व्यक्ति को अपने विचारों और भावनाओं को समझने तथा नियंत्रित करने में सहायता देती हैं।

परस्परावलंबन और वैश्विक सद्भाव

बुद्ध का प्रतित्यसमुत्पाद (परस्परावलंबन) का सिद्धांत आज के वैश्वीकरण युग में अत्यंत सार्थक है। विश्व की अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और संस्कृति परस्पर जुड़ी हुई हैं। किसी एक देश का निर्णय संपूर्ण विश्व को प्रभावित कर सकता है। परस्परावलंबन की समझ करुणा और सह-अस्तित्व की भावना को जन्म देती है। 20वीं शताब्दी युद्ध और हिंसा की शताब्दी रही; 21वीं शताब्दी को संवाद और शांति की शताब्दी बनाने की आवश्यकता है। यह तभी संभव है जब हम विविध संस्कृतियों और धर्मों के प्रति सम्मान और संवाद की भावना विकसित करें।

संप्रदाय से परे सार्वभौमिकता

बौद्ध धर्म का एक विशिष्ट गुण इसकी तर्कसंगतता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सामंजस्य है। कोई व्यक्ति पुनर्जन्म या निर्वाण की अवधारणा को स्वीकार किए बिना भी बौद्ध दर्शन से लाभान्वित हो सकता है। नैतिकता, ध्यान, करुणा और प्रज्ञा जैसे तत्व सार्वभौमिक हैं। डिजिटल युग में एकाग्रता का अभाव सामान्य समस्या है। ध्यान की साधना मन को स्थिर करती है और व्यक्ति को प्रतिक्रियात्मक व्यवहार से बचाकर सजग बनाती है। जब हम "मैं" और "मेरा" की संकीर्ण भावना से ऊपर उठते हैं, तब जीवन अधिक सहज और आनंदमय बनता है।

सामाजिक समानता और नैतिक सुधार

इतिहास में बौद्ध धर्म ने सामाजिक समता को बढ़ावा दिया। इसने जन्म आधारित भेदभाव को चुनौती दी और स्त्रियों एवं वंचित वर्गों को आध्यात्मिक अधिकार प्रदान किए। आज जब विश्व में समानता और मानवाधिकार के प्रश्न उठ रहे हैं, बुद्ध की यह दृष्टि प्रेरणास्पद है। करुणा (करुणा) और मैत्री (मैत्री) जैसे बौद्ध मूल्यों से समावेशी और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण संभव है।

अशांत विश्व में शांति का मार्ग

आज विश्व आतंकवाद, युद्ध और वैचारिक कट्टरता से जूझ रहा है। इन सभी की जड़ें लोभ, द्वेष और अज्ञान में हैं। बुद्ध का समाधान बाहरी दमन नहीं, बल्कि आंतरिक रूपांतरण है। अष्टांगिक मार्ग; सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि; व्यक्ति और समाज दोनों के लिए संतुलित जीवन का मार्ग प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में बुद्ध की शिक्षाएँ इसलिए प्रासंगिक हैं क्योंकि वे मानव जीवन की मूल समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती हैं। वे हमें सिखाती हैं कि वास्तविक प्रगति केवल बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि आंतरिक विकास से संभव है। जब मनुष्य स्वयं को अपना स्वामी मानकर नैतिक और सजग जीवन जीता है, तभी समाज में शांति और सामंजस्य स्थापित होता है। इस प्रकार, बुद्ध का संदेश आज भी मानवता के लिए प्रकाश स्तंभ के समान है—जो हमें आत्मानुशासन, करुणा और प्रज्ञा के मार्ग पर अग्रसर करता है।

के-पॉप से के-ड्रामा तक: भारतीय बच्चों के बीच कोरियाई संस्कृति की लोकप्रियता

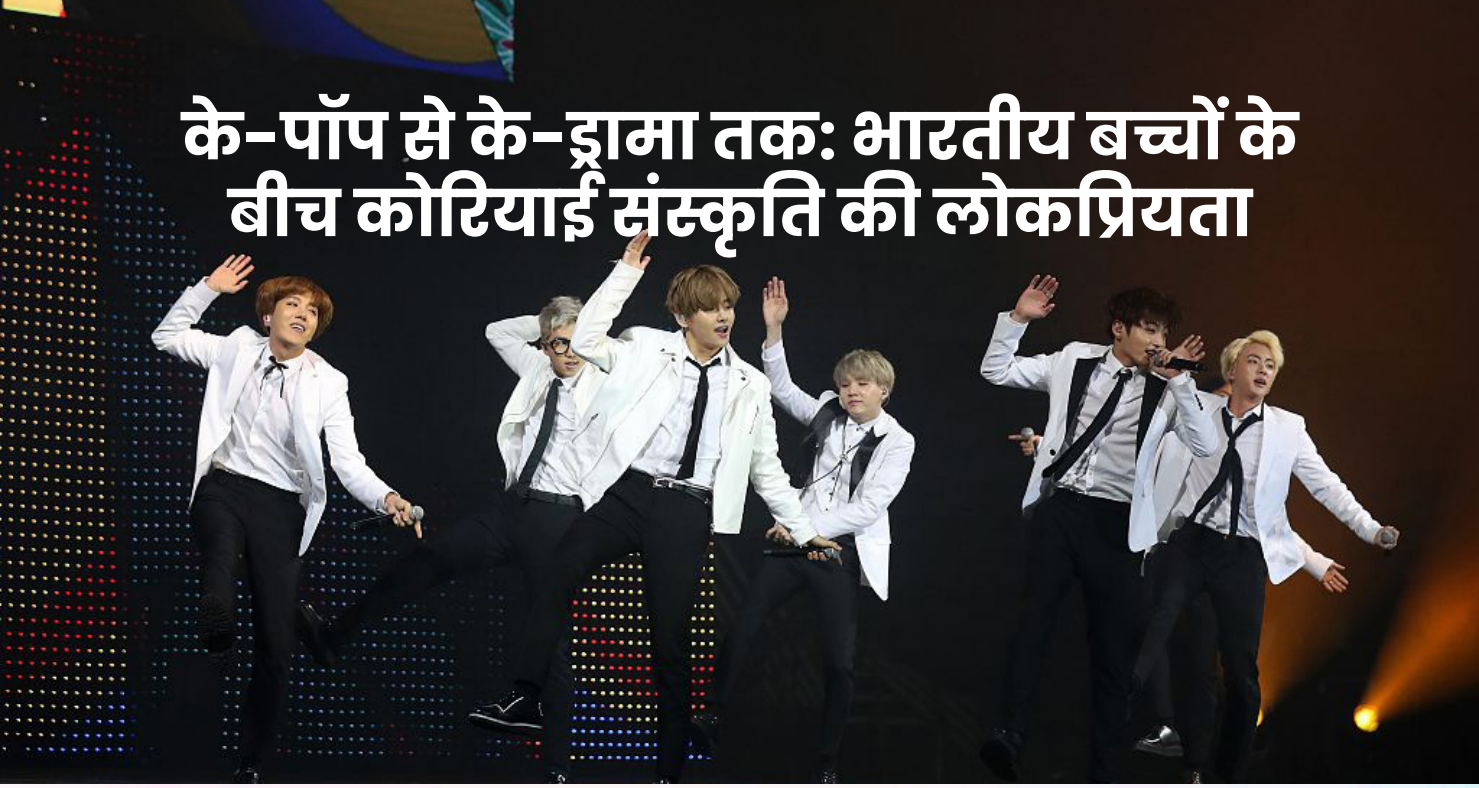

प्रांशुल गोयल
ज़ी न्यूज़

पिछले कुछ वर्षों में भारत में बच्चों और किशोरों के बीच कोरियाई संस्कृति का प्रभाव तेज़ी से बढ़ा है। कभी केवल सीमित वर्ग तक सिमटी रहने वाली यह संस्कृति आज भारतीय घरों, स्कूलों और डिजिटल प्लेटफॉर्मों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। कोरियाई पॉप संगीत (K-Pop), कोरियाई धारावाहिक (K-Drama), फैशन, भोजन और भाषा ने भारतीय बच्चों की रुचियों और जीवनशैली को नई दिशा दी है। इस सांस्कृतिक प्रसार का सबसे बड़ा माध्यम इंटरनेट और सोशल मीडिया रहा है। यूट्यूब, नेटफ्लिक्स, इंस्टाग्राम और अन्य डिजिटल मंचों ने कोरियाई कंटेंट को बच्चों तक आसानी से पहुँचाया है। बीटीएस, ब्लैकपिंक जैसे के-पॉप समूहों ने भारतीय बच्चों के बीच जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की है। उनके संगीत, नृत्य और प्रस्तुति शैली ने बच्चों को न केवल मनोरंजन दिया है, बल्कि उन्हें रचनात्मक गतिविधियों जैसे डांस, म्यूज़िक और वीडियो निर्माण की ओर भी प्रेरित किया है।

कोरियाई धारावाहिकों का प्रभाव भी कम नहीं है। ये धारावाहिक भावनात्मक कथानक, पारिवारिक मूल्यों और अनुशासित जीवनशैली को दर्शाते हैं, जिससे बच्चे जुड़ाव महसूस करते हैं। कई माता-पिता यह भी मानते हैं कि कोरियाई कार्यक्रमों में दिखाई जाने वाली सामाजिक शालीनता और सम्मान की भावना बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सकारात्मक भूमिका निभा रही है।

हालाँकि, इस बढ़ते प्रभाव के साथ कुछ चिंताएँ भी जुड़ी हैं। अत्यधिक स्क्रीन टाइम, विदेशी संस्कृति की अंधी नकल और अपनी स्थानीय परंपराओं से दूरी जैसे मुद्दे सामने आ रहे हैं। कुछ बच्चे कोरियाई फैशन और जीवनशैली को अपनाने की होड़ में अपनी सांस्कृतिक पहचान को नज़रअंदाज़ करने लगते हैं। यह आवश्यक है कि अभिभावक और शिक्षक बच्चों को यह समझाएँ कि किसी भी विदेशी संस्कृति को जानना और सराहना अच्छा है, लेकिन अपनी संस्कृति के महत्व को भूलना उचित नहीं।

इस संदर्भ में संतुलन की आवश्यकता है। कोरियाई संस्कृति के सकारात्मक पहलुओं—जैसे मेहनत, अनुशासन, टीमवर्क और रचनात्मकता—को अपनाया जा सकता है, साथ ही भारतीय मूल्यों, भाषाओं और परंपराओं को भी समान महत्व दिया जाना चाहिए। स्कूलों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और घरों में खुली चर्चा इस संतुलन को बनाए रखने में सहायक हो सकती है।

डिजिटल शोर के बीच, मौन की तलाश

नितिन शर्मा
(सिटीवेब न्यूज़)

आज हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ हमारी सुबह अलार्म से कम और 'नोटिफिकेशन' से ज्यादा होती है। पत्रकार हों या समाज का कोई भी हिस्सा, हम सभी एक ऐसी दौड़ का हिस्सा बन गए हैं जहाँ 'अपडेट' रहना अनिवार्य है, लेकिन 'खुद से जुड़े रहना' वैकल्पिक हो गया है।

सूचना का अम्बार और खोता हुआ विवेक
प्रेस और समाज का रिश्ता कभी गहरा और विचारपूर्ण होता था। आज सूचना (Information) की कमी नहीं है, बल्कि उसकी अधिकता एक समस्या बन गई है। जब हम हर पल दूसरों की दुनिया को स्क्रीन पर देखते हैं, तो हम अपनी दुनिया का अनुभव करना भूल जाते हैं। क्या हमने कभी सोचा है कि आखिरी बार हमने बिना फोन छुए कब कोई शाम बिताई थी?

'लाइक' की संस्कृति और सामाजिक अकेलापन
समाज अब गलियों और चौराहों से सिमटकर स्क्रीन के पिक्सल में समा गया है। हम 'कनेक्टेड' तो बहुत हैं, लेकिन 'जुड़े' हुए नहीं हैं। एक वायरल वीडियो पर हजारों कमेंट्स करने वाले समाज में, बगल में बैठे उदास दोस्त को पहचानने की फुर्सत कम होती जा रही है। यह "डिजिटल अलगाव" हमारे मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक ताने-बाने को धीरे-धीरे कमजोर कर रहा है।
अनुभव बनाम दिखावा

आजकल हम किसी खूबसूरत वादी में जाते हैं तो उसे महसूस करने से पहले उसका 'लेंस' के जरिए दीदार करते हैं। अनुभव अब जीने के लिए नहीं, बल्कि प्रदर्शन (Exhibition) के लिए होने लगे हैं। पत्रकारिता की भाषा में कहें तो हम अपनी ही जिंदगी के 'इवेंट मैनेजर' बन गए हैं, 'प्रेक्षक' नहीं।

"मौन केवल शब्दों की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि खुद को सुनने की उपस्थिति है।"

संतुलन की राह
हमें तकनीक को छोड़ना नहीं है, बल्कि उसे अपनी शर्तों पर इस्तेमाल करना सीखना होगा। समाज को फिर से उन गहन चर्चाओं की जरूरत है जहाँ शोर कम और अर्थ ज्यादा हो। अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ पल 'डिजिटल डिटॉक्स' के लिए निकालें। याद रखिए, दुनिया की सबसे अच्छी खबरें और विचार अक्सर तब आते हैं जब आप शांत होते हैं और बाहर के शोर को बंद कर देते हैं।

बाल्कन ने ब्याह लो

प्रोफेसर डॉ दीपक कुमार शर्मा, नोएडा व्यूज

दोस्तो,54 साल की मेरी उम्र है ,और पिछले 45 साल से मुझे दिमाग में शादी और ब्याह से जुड़ी हुई यादें हैं ।सबसे पहले बचपन के जो ब्याह देखें तो उस वक्त यदि शादी से जुड़ा हुआ कोई कोई न्योता आ जाता था तो न्योता एक आदमी का होता था और कोशिश होती थी की एक आध बच्चा भी उसके साथ दावत खाने चला जाए ।लेकिन आज इतनी ज्यादा न्योते आ रहे हैं, की कार्ड देखने के बाद कई बार मैंने लोगों को कहते हुए सुना है अरे यह एक और कहां से आ गया ।क्योंकि पहले शादी में रिश्तेदारों को न्योता जाता था और परिवार को और बहुत ही रेयर परिवार से बाहर के लोग न्योते में बुलाए जाते थे ।

विवाह एक पर्सनल चीज हुआ करती थी ,परंतु अब विवाह दिखावा बन गई है। एक-एक शादी में चार-चार 6000 लोग बुलाए जा रहे हैं ना आने वाले जानते हैं की दूल्हा दुल्हन कौन है ,ना दूल्हा दुल्हन जानते हैं कि उन्हें आशीर्वाद कौन दे रहा है। और बस दिखावा चल रहा है और इसीलिए इस दिखावे के चलते अब बहुत सारी शादियां संपन्न ही नहीं हो पा रही ।मेरे खुद के पास 300 से ज्यादा बायोडाटा है लड़के लड़कियों के और 20 से ज्यादा पर्सनल रिक्वेस्ट है लोगों की के डॉक्टर साहब कहीं कोई अच्छा लड़का या लड़की मिले तो ब्याह करवा दीजिए । फिर मैं यह
देखता हूं कि आखिर बात क्यों नहीं बन रही है तो पहले यदि नाइ के ने रिश्ता ले लिया या किसी बड़े बूढ़े ने रिश्ता ले लिया तो किसी की हिम्मत नहीं थी की लड़का, लड़के का बाप ,मां या कोई और सदस्य मना कर दे ।लेकिन आज लड़की को भी लड़का देखना है, लड़के को भी लड़की देखनी है, लड़के के परिवार को भी लड़के का परिवार देखना है ,लड़की के परिवार को भी लड़के का परिवार देखना है ,फिर उनकी जायदाद भी देखनी है, फिर कमाई भी देखनी है ,फिर हैसियत भी देखनी है, फिर लड़की वाले को यह देखना है कि कितने खर्चे में काम बन जाएगा और लड़के वाला यह देख रहा है की कितना मिल जाएगा जबकि बाहरी रूप से वह यह दिखाना चाहता है चाहता है कि उसे कुछ नहीं चाहिए ।तो यह जो गड़बड़ झाला चल रहा है उसमें शादी ब्याह एक संस्कार के रूप में कहीं पीछे छूट गया है और अब सौदे होने लगे हैं ।जो शादी ब्याह के बायोडाटा में देख रहा हूं वह नौकरी जैसे बायोडाटा लगते हैं क जी शिक्षा इतनी है और पैकेज इतने का है और हॉबीज यह है और कहीं भी उसमें बेटी में क्या संस्कार है या बेटे में क्या संस्कार है या लड़की अथवा लड़के के परिवार की सामाजिक हैसियत क्या है इसका उल्लेख बहुत नहीं मिलता ।और इसलिए शादी ब्याह जो एक सामाजिक संबंध हुआ करते थे वह अब कानूनी संबंध से बन गए हैं।

हर चीज हर जगह के लिए फिट नहीं है । हमारे देश के लिए ब्याह एक संस्कार है जबकि पाश्चात्य देशों के लिए ब्याह एक कॉन्ट्रैक्ट है ।तो हम जब आधुनिक की करण के इस दौर में पश्चिम की अंधाधुंध देखा देखी कर रहे हैं, होड कर रहे हैं तो ऐसे में अब बच्चे ब्याहने मुश्किल हो गए हैं। जो भी लोग इस लेख को पढ़ें और जिनके भी बच्चे अभी ब्याहने लायक हो रहे हैं मैं उनसे कुछ अपने अनुभव के आधार पर चार छह बातें कहना चाहता हूं। पहले तो यह की शादी, बेटी या बेटे की 25 साल की उम्र के आसपास कर दो। यदि उस वक्त तक उन दोनों का कैरियर बन गया है ,तो बढ़िया बात है वरना बन जाएगा पर ब्याह कर दो समय से। दूसरी बात लड़के की तो देखी जाती है कि वह मेहनत कितनी कर सकता है और लड़की का देखा जाता है उसका संस्कार कैसे हैं, तो इन चीजों को देखो जब भी रिश्ता करने जाओ ना कि यह देखो कि उसका किराया कितना आ रहा है और उसके यहां पर सुविधा और साधन कितनी है, और ना ही अपने बेटे या बेटी की कीमत लगाओ।

तीसरी बात जो मेरे बड़े मन की बात है पर मैं खुद भी ना कर पाया कि ,यह जो 2000 की प्लेट 2500 की प्लेट 3,,3, 4,,,4 हजार की प्लेट वाले बैंक्विट हॉल में शादी हो रही है और हजारों रुपए सिर्फ एक रात में, हजारों तो मैं बहुत कम बोल दिया लाखों रुपए सिर्फ एक रात के जीभ के स्वाद पर खर्च हो रहे हैं उन पर अंकुश लगाओ ।और मेरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि वह जो लड्डू जलेबी की रोटी होती थी वह जो पंगत बैठक रोटी खवाई जाती थी ,वह जो परिवार वाले और गांव वाले मिलकर मदद करते थे उस तरह से शादी विवाह के खाने पर लाख 2 लाख रुपए से ऊपर खर्च मत करो ।और जो आपका बजट है या अपने जोड़ा है जिंदगी में ,उससे बच्चों को या तो एक घर लेकर दे दो और या उनका कोई बिजनेस या काम शुरू करवा दो । मेरा ऐसा मानना है कि इस तरह की बातें चल तो बहुत लोगों के दिमाग में रही है बस वह जमीन पर नहीं उतर रही है ।अब किसी न किसी को तो शुरुआत करनी पड़ेगी ।तो मेरा इस लेख को पढ़ने वाले सभी समर्थ जनों से अनुरोध है कि उनमें से जो भी इस प्रथा को शुरू कर देगा उसका मैं जीवन भर ऋणी रहूंगा। उसका सामाजिक सम्मान करूंगा उसके गुणगान करूंगा और फिर उनके उदाहरण देकर इस प्रथा को आगे बढ़ाने में सहयोग करूंगा। अब 30 साल के बेटे बेटी हो रही हैं और फिर भी ब्याह को मना कर रहे हैं। वास्तविकता में वो ब्याह को मना नहीं कर रहे हैं, वह जिम्मेदारी लेने को मना कर रहे हैं ।ब्याह एक जिम्मेदारी है अभी लड़की 30 साल तक फुल मजे में जिंदगी जी रही है और ब्याह होने के बाद उसे सांस की ससुर की ,परिवार के अन्य जनों की जिम्मेदारी लेनी पड़ जाएगी ,और उधर जो बेटा है वह भी 30 साल से मौज ले रहा और ब्याह हो जाएगा तो और किसी की भी न तो उसे उस बेटी की तो जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी जो उसे ब्याही है और इससे वह दोनों बच रहे हैं ।हम सब का यह दायित्व बनता है की बच्चों को समझाएं कि वह अपनी जिम्मेदारियां को समझें और समय से उन्हें उठाने की भी कोशिश करें ।शादी और ब्याह के लिए चाहिए क्या ,मिनिमम क्या चाहिए एक लड़का जो हर तरह से स्वस्थ हो प्रसन्न हो योग्य और एक लड़की जो कि स्वस्थ हो प्रसन्न हो और योग्य हो।अब स्वस्थ और प्रसन्न तो देखने से दिख जाएगा लेकिन योग्यता के हर एक के पैमाने अलग-अलग हैं ।आप अपने उन पैमानो में थोड़ी ढील दीजिए और बच्चों को समय से ब्याह लीजिए ।इन सब चक्र में मत पड के जी मेरी बेटी ने पी एच डी करि है तो मुझे भी पी एच डी चाहिए ।कि मेरी लड़की का 16 लाख का पैकेज है तो लड़के का 20 लाख का तो होना ही चाहिए ।मेरे तो पेंटा हाउस है तो सामने वाले क भी कोठी तो होनी चाहिए ।यह सब चीज साधन है और इन सब साधनों में सुख की गारंटी नहीं है। अपने बेटे या बेटी के लिए सुख ढूंढो।जिंदगी भर आपको दुआएं देंगे ।आप में से किसी के भी बेटे या बेटी के लिए सुख ढूंढने में के लिए सुख ढूंढने में मैं आपकी मदद करने को तैयार हूं.।

प्रभावी संवाद मात-पिता व बच्चो के बींच परस्पर प्रेम की नींव

अनुशासन का अर्थ सिखाना है, न कि डराना।

शशांक अग्रवाल
राष्ट्रीय धरोहर

संवाद के द्वार खुले रखें (OPEN COMMUNICATION) बच्चों को महसूस कराएं कि वे आपसे किसी भी विषय पर बात कर सकते हैं। जब बच्चा कोई सवाल पूछे, तो उसे डांटने या शर्मिंदा करने के बजाय, उसकी उम्र के अनुसार सरल और स्पष्ट जवाब दें। यूनिसेफ (UNICEF) के अनुसार, खुला संवाद बच्चों को गलत जानकारी के लिए इंटरनेट या दोस्तों पर निर्भर होने से रोकता है।घर मे बच्चो के साथ सही शब्दावली का उपयोग करें बच्चों को शरीर के अंगों के लिए 'बचकाने' नामों के बजाय उनके सही जैविक नाम सिखाएं। इससे बच्चों में अपने शरीर के प्रति सम्मान पैदा होता है और किसी भी प्रकार के दुर्व्यवहार की स्थिति में वे स्पष्ट रूप से अपनी बात कह पाते हैं।गुड टच' और 'बैड टच' की शिक्षा (SAFE AND UNSAFE TOUCH)यह सबसे महत्वपूर्ण कदम है।

बच्चों को समझाएं कि:उनके शरीर पर केवल उनका अधिकार है।प्राइवेट पार्ट्स क्या हैं और उन्हें कोई और क्यों नहीं छू सकता। अगर कोई उन्हें असहज महसूस कराए, तो उन्हें तुरंत "ना" कहना चाहिए और आपको बताना चाहिए। बच्चों के उपकरणों पर GOOGLE FAMILY LINK जैसे पैरेंटल कंट्रोल ऐप्स का उपयोग करें। उन्हें समझाएं कि इंटरनेट पर दिखने वाली हर चीज़ सच या सही नहीं होती।बढ़ती उम्र और किशोरावस्था के बदलावों के लिए तैयार करे जैसे-जैसे बच्चा बड़ा हो (8-10 वर्ष की आयु से), उसे उसके शरीर में होने वाले हार्मोनल और शारीरिक बदलावों के बारे में पहले से जानकारी दें। इससे वे डरे हुए या भ्रमित होने के बजाय आत्मविश्वास महसूस करेंगे।

।यदि आपको लगता है कि बच्चा किसी गलत प्रभाव में है या बहुत अधिक जिज्ञासु है, तो आप किसी बाल मनोवैज्ञानिक (CHILD PSYCHOLOGIST) से परामर्श ले सकते हैं। शारीरिक बनावट का अंतर बच्चों को बताएं कि प्रकृति ने लड़के और लड़कियों के शरीर को अलग-अलग बनाया है। जैसे किसी के बाल लंबे होते हैं, किसी के छोटे, वैसे ही शरीर के कुछ अंग अलग होते हैं। इसे वैज्ञानिक और सामान्य तरीके से समझाएं ताकि उनके मन में कोई झिझक न रहे।व्यक्तिगत सीमाओं का महत्व उन्हें 'गुड टच और बैड टच' के बारे में बताते हुए यह सिखाएं कि हर किसी का शरीर निजी (Private) होता है। चाहे भाई हो या बहन, एक-दूसरे की निजता का सम्मान करना चाहिए, जैसे कपड़े बदलते समय या बाथरूम का उपयोग करते समय बच्चों को समझाएं ओर समझाये कि जरूरी नहीं कि भाई को क्रिकेट पसंद हो तो बहन को भी वही पसंद आए। उनके खिलौने, शौक या रंग पसंद करने में अंतर हो सकता है, और यह बिल्कुल सामान्य है। उन्हें एक-दूसरे की पसंद का सम्मान करना सिखाएं।यह सबसे महत्वपूर्ण है। उन्हें बताएं कि शरीर या लिंग के आधार पर कोई बड़ा या छोटा नहीं होता।काम का बंटवारा: घर के काम सिर्फ बहन के नहीं और बाहर के काम सिर्फ भाई के नहीं हैं।शिक्षा और अवसर: दोनों को समान रूप से पढ़ने और खेलने का हक है।उन्हें समझाएं कि भाई और बहन एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त और रक्षक होते हैं।

शारीरिक अंतर से ज्यादा जरूरी उनके बीच का प्यार और आपसी सहयोग है।माता-पिता के लिए सुझाव:बच्चों के सवालों से चिढ़ें नहीं, बल्कि शांति से जवाब दें।घर में "लड़का है तो नहीं रोएगा" या "लड़की है तो बाहर नहीं जाएगी" जैसी बातें न करें।आप बच्चों को कहानियों के माध्यम से समझाने के लिए Pratham Books जैसी वेबसाइट्स पर उपलब्ध बाल कहानियों का सहारा ले सकते हैं।इस तरह की बातचीत से बच्चों में एक-दूसरे के प्रति सम्मान और समझ विकसित होगी।बच्चों पर चिल्लाना और उन्हें पीटना उनके मानसिक और शारीरिक विकास के लिए अत्यंत हानिकारक हो सकता है। शोध और विशेषज्ञों के अनुसार, इसके गंभीर प्रभाव इस प्रकार हैं: चिल्लाने और पीटने के नुकसान मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर: बच्चों के व्यवहार में आक्रामकता: जो बच्चे घर में हिंसा या चिल्लाना देखते हैं, वे अक्सर खुद भी आक्रामक हो जाते हैं और दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करने लगते हैं।माता-पिता और बच्चे के बीच का विश्वास खत्म हो जाता है और बच्चा अपनी बातें साझा करने से डरने लगता है।अक्सर डर के माहौल में रहने वाले बच्चों का ध्यान पढ़ाई और नई चीजों को सीखने में कम लगता है। यदि बच्चा बात नहीं मान रहा है, तो शांत रहें (Time-out): गुस्सा आने पर तुरंत प्रतिक्रिया न दें। गहरी सांस लें और थोड़ी देर के लिए उस जगह से हट जाएं। समझाने की कोशिश करें: बच्चों के नखरे (Temper Tantrums) अक्सर किसी जरूरत या भावनाओं को व्यक्त न कर पाने के कारण होते हैं। उन्हें सुनने और समझने का प्रयास करें।बच्चे को मारने के बजाय उन्हें उनके व्यवहार के परिणामों के बारे में बताएं (जैसे- खिलौने ले लेना या टीवी का समय कम करना लेकिन जब बच्चा अच्छा काम करे, तो उसकी सराहना करें। इससे वे सही व्यवहार के लिए प्रेरित होते हैं।विशेषज्ञों का कहना है कि अनुशासन का अर्थ सिखाना है, न कि डराना।

समाजवादी पार्टी

MLC प्रत्याशी

विधान परिषद स्नातक मेरठ, सहारनपुर खण्ड निर्वाचन क्षेत्र

प्रमेन्द्र सिंह भाटी एडवोकेट

की तरफ से आप सभी को

होली

की हार्दिक शुभकामनाएँ

स्नातक निर्वाचन क्षेत्र में शामिल जिलों की सूची

- गौतमबुद्धनगर
- मेरठ
- शामली
- बागपत
- बुलंदशहर
- हापुड़
- मुजफ्फरनगर
- सहारनपुर
- गाजियाबाद

9540303010

Pramendra Bhati
(Advocate)
EX. PRESIDENT
9810558538

DIST. COURT BAR ASSOCIATION NOIDA, GAUTAM BUDDHA NAGAR

Office: Zamindar Ramchandra Market, Near Yatharth Hospital, Greater Noida, Bisrakh, Sec. 1, G.B. Nagar

legal.pramendra@gmail.com

भाषाओं की आवश्यकता और अवसर

पंकज कुमार शर्मा
(क्रिस्लिंगुआ)

भाषाएँ हैं तो सूचना संचार है, अन्यथा कल्पना कीजिए कि अगर भाषाएँ ना हों तो क्या हो सकता है? काम रुकेगा, ग़लतफ़हमियाँ बढ़ेंगी, प्यार, ज्ञान, व्यापार सब इशारों में अटक जाएगा। माँ ने इशारे से ग्लास दिखा के पूछा "चाय?" बेटी ने उसे हाथ से छीन के डस्टबिन में उड़ेल दिया । ढाबे के कर्मचारी ने इशारे से आपको बुलाया, दो हजार लोग दौड़ के पहुंच गए वहाँ कि शायद प्रसाद वितरण है । लड़का फूल बेच रहा है, लड़की ने प्यार का इजहार समझ के उसके गाल पर तमाचा जड़ दिया। युद्ध हो जायेंगे, अनर्थ हो जाएगा अगर भाषाएं ना हों ।

क्या होता होगा उस माँ का अनुभव जब उसका नवजात शिशु रो रहा हो और वो समझ ना पाए उसकी पीड़ा क्या है? भाषा नहीं हो तो कैसे समझें किसी व्यक्ति की आवश्यकता? वो मदद करना चाहता है या मदद की माँग कर रहा है? संवाद के बिना सारी व्यवस्थाएं पल भर में फेल हो सकती हैं और इसीलिए आवश्यकता है संवाद को सुलभ बनाने की ।

संस्कृत को भारत और दक्षिण एशिया की कई भाषाओं की जननी माना जाता है जिनमें हिंदी, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, असमिया, उड़िया, नेपाली, कोंकड़ी आदि मुख्य हैं, इसके परिवार से सैकड़ों क्षेत्रीय भाषाएँ हैं जैसे ब्रजभाषा, इसका संस्कृत से गहरा साहित्यिक संबंध है। संस्कृत ग्रंथों (भागवत पुराण आदि) की कथाएँ, रागों की बंदिशें ब्रज में गाई और लिखी गईं। सूरदास, रहीम, रसखान जैसे कवियों ने ब्रज भाषा में रचनाएँ कीं, इसे शास्त्रीय संगीत की भाषा भी कहा जाता है।

ऐसी अनेकों भाषाएँ संवाद को सुलभता से संचालित करने का कार्य करती हैं परंतु प्रश्न ये है की क्या हमें इन भाषाओं से हमारी बढ़ती दूरियों का बोध है?

आज की ग्लोबल दुनियाँ में बहुभाषी होना एक स्ट्राँग प्रोफ़ेशनल असेट है। भाषाएँ सिर्फ संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि करियर ग्रोथ का पावरफुल टूल हैं। जर्मन, फ़्रेंच, कोरियन, इटालियन जैसी भाषाएँ अनेकों रोजगार के अवशर प्रदान कर रही हैं और हाल में हुए भारत-यूरोपियन यूनियन के फ्री ट्रेड एग्रीमेंट के बाद यूरोपियन भाषाओं के जानकारों के लिए रोजगार और भी ज़्यादा बढ़ेंगे ।

हमारी क्षेत्रीय भाषाएँ हमारे देश की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान की आधारशिला हैं। उनका महत्व कई स्तरों पर समझा जा सकता है जैसे लोककथाएँ, भजन, काव्य और भक्ति साहित्य क्षेत्रीय भाषाओं में संरक्षित हैं। हर भाषा अपने क्षेत्र की परंपराओं, रीति-रिवाजों और इतिहास को जीवित रखने का कार्य करती है और ये भाषा ही है जिसके माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान का संचार संभव है।

युवाओं द्वारा रोज़ नए वीडियो कंटेंट क्षेत्रीय भाषाओं में हमे देखने को मिलते हैं । लाखों की संख्या में लोग अपनी अपनी बोली वाले चैनल देखते हैं और इसका सीधा सीधा आर्थिक और पेशेवर महत्व है जैसे क्षेत्रीय मीडिया, सिनेमा और OTT में तेजी से विकास, लोकल मार्केटिंग और व्यवसाय में क्षेत्रीय भाषा की बड़ी भूमिका, अनुवाद, पत्रकारिता, शिक्षण, कंटेंट क्रिएशन में करियर के अवसर। भारत में क्षेत्रीय भाषाओं का डिजिटल ग्रोथ बहुत तेज़ है।

बौद्धिक विकास में उपयोगी मातृभाषा में सीखना बच्चों के लिए स्वाभाविक होता है, इसलिए वे अवधारणाएँ जल्दी समझते हैं, सोचने, तर्क करने और समस्या-समाधान की क्षमता बढ़ती है।

कॉलेज जाने वाले छात्र एक विदेशी भाषा अवश्य सीखें, बहुभाषी बनें, नौकरी की तलाश केवल भारत में ही क्यों भाई, बाहर के देशों में क्यों नहीं? वो भी तब जब वहाँ हमें यहाँ की तुलना में बहुत अच्छा वेतन और अच्छी सुविधाएं मिल रही हों।

OXFORD GREEN PUBLIC SCHOOL ,GREATER NOIDA

Oxford Green Public School
Plot No: 209 M, Sirsa, Greater Noida, G.B. Nagar
9873660079, 9873662903
rajeshogps@gmail.com

Oxford Green Public School
Plot No: 264, Peepalka, Greater Noida, G.B. Nagar
9759554300,9759554326
ogpspeepalka@gmail.com

Oxford Green Public School
Plot No : 341, Mohammdabad Kheda Greater Noida, G.B. Nagar
9758580228, 9758580336
rajeshogps2@gmail.com

कंक्रीट के जंगल में घुटती साँसें

दिल्ली एनसीआर की दमघोंटू हकीकत

मोहित अधाना
संचार नाउ

दिल्ली-एनसीआर आज देश के सबसे तेज़ी से बढ़ते शहरी इलाकों में शामिल है। नोएडा और ग्रेटर नोएडा जैसी आधुनिक बसावटें ऊँची इमारतों, एक्सप्रेसवे और चमकदार परियोजनाओं के साथ विकास की कहानी कहती हैं। लेकिन इस विकास की चकाचौंध के पीछे एक सच्चाई छिपी है, जो हर सुबह आँख खुलते ही महसूस होती है—भारी, धुंधली और साँस लेने में मुश्किल पैदा करती हवा।

पिछले कुछ वर्षों में दिल्ली-एनसीआर की वायु गुणवत्ता लगातार बिगड़ती गई है। सर्दियों में हालात और भयावह हो जाते हैं, जब आसमान पर धुंध की मोटी चादर छा जाती है और साँस लेना तक चुनौती बन जाता है। नोएडा और ग्रेटर नोएडा में बढ़ते निर्माण कार्य, सड़कों की धूल, वाहनों की बेतहाशा संख्या और औद्योगिक गतिविधियाँ हवा को ज़हरीला बना रही हैं। नियम-कानून तो हैं, लेकिन उनकी निगरानी और सख्ती अक्सर कागज़ों तक ही सीमित रह जाती है।

कभी हरियाली और खुले मैदानों के लिए पहचाने जाने वाले ये इलाके अब कंक्रीट के जंगल में बदलते जा रहे हैं। पेड़ों की कटाई के साथ-साथ प्राकृतिक संतुलन भी टूटता चला गया। नतीजा यह है कि लोग अपने ही घरों में एयर प्यूरीफायर के सहारे साँस लेने को मजबूर हैं। बच्चों को बाहर खेलने से रोका जाता है और बुजुर्गों के लिए सुबह की सैर भी जोखिम भरी हो गई है। दमा, एलर्जी और साँस से जुड़ी बीमारियाँ आम होती जा रही हैं।

समस्या केवल हवा तक सीमित नहीं है। कई इलाकों में पानी की गुणवत्ता भी गंभीर चिंता का विषय बन चुकी है। भूजल स्तर गिरता जा रहा है और साफ पानी के लिए आरओ और बोतलबंद पानी पर निर्भरता बढ़ रही है। करोड़ों रुपये के फ्लैट्स में रहने वाले लोग भी शुद्ध हवा और पानी जैसी बुनियादी जरूरतों के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

अक्सर जिम्मेदारी विभागों के बीच घूमती रहती है—कभी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, कभी नगर निगम, कभी विकास प्राधिकरण। योजनाएँ बनती हैं, घोषणाएँ होती हैं, लेकिन ज़मीनी बदलाव लोगों को नजर नहीं आता। इस लापरवाही का खामियाजा आम नागरिक अपनी सेहत से चुका रहा है।

दिल्ली-एनसीआर में कंक्रीट के इस जंगल में घुटती साँसें एक चेतावनी हैं। विकास ज़रूरी है, लेकिन अगर वही विकास जीवन की बुनियादी ज़रूरतों को छीन ले, तो उस पर दोबारा सोचने की जरूरत है। अब समय है कि नीति और नियोजन में इंसान और पर्यावरण को केंद्र में रखा जाए, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ साफ हवा में खुलकर सांस ले सकें।

बारूद के ढेर पर दुनिया

कैलाश चंद
जन प्रवाद

आज की दुनिया तेजी से बदल रही है। तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और आर्थिक विकास के बीच मानव सभ्यता ने अभूतपूर्व ऊँचाइयाँ छुई हैं, लेकिन इसी चमक-दमक के पीछे असुरक्षा, युद्ध और संघर्ष की छाया भी गहराती जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है मानो पूरी दुनिया बारूद के ढेर पर बैठी हो, जहाँ एक छोटी-सी चिंगारी भी व्यापक विनाश का कारण बन सकती है। रूस और यूक्रेन के बीच चल रहा युद्ध, जो 2022 में शुरू हुआ, आज भी वैश्विक राजनीति को प्रभावित कर रहा है। RUSSIA और UKRAINE के इस संघर्ष ने न केवल लाखों लोगों को प्रभावित किया, बल्कि पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को झकझोर दिया। ऊर्जा संकट, खाद्यान्न की कमी और बढ़ती महंगाई ने यह स्पष्ट कर दिया कि किसी एक क्षेत्र का युद्ध वैश्विक अस्थिरता को जन्म दे सकता है। इसी प्रकार, मध्य-पूर्व में Israel और Hamas के बीच संघर्ष ने क्षेत्रीय शांति को गंभीर चुनौती दी है। वर्षों से चला आ रहा यह विवाद समय-समय पर हिंसक रूप ले लेता है और निर्दोष नागरिक इसकी कीमत चुकाते हैं। यह स्थिति बताती है कि राजनीतिक समाधान के अभाव में संघर्ष बारूद की तरह जमा होता रहता है। एशिया में भी तनाव कम नहीं है।

China और Taiwan के बीच बढ़ता तनाव वैश्विक चिंता का विषय बना हुआ है। यदि यह विवाद खुला सैन्य टकराव बन जाता है, तो इसके परिणाम केवल क्षेत्रीय नहीं, बल्कि वैश्विक होंगे। विश्व अर्थव्यवस्था, विशेषकर तकनीकी और व्यापारिक क्षेत्र, इससे बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं। केवल युद्ध ही नहीं, परमाणु हथियारों की होड़ भी दुनिया को असुरक्षा की ओर धकेल रही है। कई देशों के पास विनाशकारी क्षमता वाले हथियार मौजूद हैं। यदि इनका प्रयोग हुआ, तो परिणाम मानव इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी हो सकता है। शीत युद्ध के दौर की याद दिलाती यह स्थिति बताती है कि शांति केवल समझौतों से नहीं, बल्कि विश्वास और सहयोग से कायम रहती है। आर्थिक असमानता भी एक बड़ा कारण है। अमीर और गरीब देशों के बीच बढ़ती खाई सामाजिक असंतोष को जन्म देती है। बेरोजगारी, महंगाई और संसाधनों की कमी लोगों को आक्रोशित करती है, जो कई बार हिंसक आंदोलनों का रूप ले लेती है। जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक समस्या भी भविष्य के संघर्षों का कारण बन सकती है, क्योंकि पानी और भोजन जैसे संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। सोशल मीडिया और सूचना युद्ध ने स्थिति को और जटिल बना दिया है। फर्जी खबरें और नफरत फैलाने वाले संदेश समाज में विभाजन को गहरा करते हैं। इससे राजनीतिक ध्रुवीकरण बढ़ता है और सामाजिक सौहार्द कमजोर पड़ता है। फिर भी, आशा की किरण पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठन शांति बनाए रखने के प्रयास करते रहे हैं। यदि विश्व समुदाय संवाद, सहयोग और कूटनीति को प्राथमिकता दे, तो बारूद के इस ढेर को हटाया जा सकता है।

अंततः, यह समझना आवश्यक है कि युद्ध और संघर्ष किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं होते। मानवता का भविष्य शांति, सहअस्तित्व और पारस्परिक सम्मान में ही सुरक्षित है। यदि दुनिया ने समय रहते समझदारी नहीं दिखाई, तो एक छोटी-सी चिंगारी भी वैश्विक विनाश का कारण बन सकती है। इसलिए आज आवश्यकता है कि हम संघर्ष की राह छोड़कर सहयोग और संवाद की दिशा में आगे बढ़ें, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ एक सुरक्षित और शांतिपूर्ण दुनिया में सांस ले सकें।

मीडिया प्रशासनिक अधिकारियों में सामंजस्य जरूरी

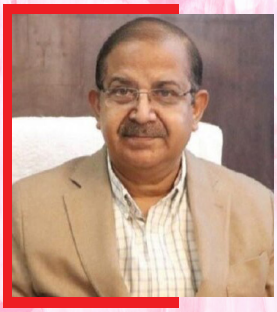

डॉ. अरुणवीर सिंह,
पूर्व आईएएस

लोकतंत्र का आधार पारदर्शिता, जवाबदेही और संवाद है। इन तीनों स्तंभों को सशक्त बनाने में प्रेस और प्रशासनिक अधिकारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रेस जनता की आवाज़ बनकर सवाल उठाती है, जबकि अधिकारी नीतियों को लागू कर जनहित सुनिश्चित करते हैं। यदि इन दोनों के बीच आपसी सामंजस्य बना रहे, तो शासन अधिक प्रभावी, पारदर्शी और जनोन्मुखी बन सकता है।

भारत में प्रेस की स्वतंत्रता को संवैधानिक संरक्षण प्राप्त है। यही कारण है कि PRESS COUNCIL OF INDIA जैसी संस्थाएं मीडिया की नैतिकता और स्वतंत्रता की निगरानी करती हैं। दूसरी ओर, प्रशासनिक तंत्र में INDIAN ADMINISTRATIVE SERVICE जैसे अधिकारी शासन की रीढ़ माने जाते हैं। दोनों की भूमिकाएं भिन्न होते हुए भी एक-दूसरे की पूरक हैं।

अक्सर देखा गया है कि सूचनाओं के अभाव, गलतफहमी या पूर्वाग्रह के कारण प्रेस और अधिकारियों के बीच टकराव की स्थिति बन जाती है। कई बार अधिकारी मीडिया को केवल आलोचक के रूप में देखते हैं, जबकि मीडिया कुछ मामलों में प्रशासन की हर कार्रवाई को संदेह की दृष्टि से प्रस्तुत करती है। ऐसी स्थिति में संवाद की कमी से अविश्वास बढ़ता है, जिसका सीधा असर जनता पर पड़ता है।

इस समस्या का समाधान पारदर्शी और नियमित संवाद में निहित है। यदि प्रशासन समय-समय पर प्रेस ब्रीफिंग करे, तथ्यों को स्पष्ट रूप से साझा करे और संवेदनशील मुद्दों पर आधिकारिक प्रतिक्रिया दे, तो अफवाहों और अटकलों की गुंजाइश कम हो जाती है। वहीं, प्रेस को भी खबरों के प्रकाशन से पहले तथ्यों की पुष्टि करनी चाहिए और संतुलित भाषा का प्रयोग करना चाहिए। जिम्मेदार पत्रकारिता ही विश्वसनीयता की आधारशिला है।

तकनीक के इस युग में सूचना का प्रवाह तेज हो गया है। सोशल मीडिया के कारण खबरें मिनटों में फैल जाती हैं। ऐसे में अधिकारियों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है कि वे त्वरित और सटीक जानकारी उपलब्ध कराएं। साथ ही, पत्रकारों को भी सत्यापन की प्रक्रिया को प्राथमिकता

देनी चाहिए। 'पहले प्रकाशित करो, बाद में सुधार करो' की प्रवृत्ति दोनों के संबंधों को नुकसान पहुंचाती है।

आपसी सम्मान भी सामंजस्य का महत्वपूर्ण तत्व है। प्रेस को यह समझना होगा कि प्रशासनिक निर्णय कई बार जटिल परिस्थितियों में लिए जाते हैं, जहां कानूनी और नीतिगत सीमाएं होती हैं। वहीं अधिकारियों को यह स्वीकार करना चाहिए कि मीडिया की आलोचना लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा है, न कि व्यक्तिगत हमला। यदि आलोचना को सुधार के अवसर के रूप में लिया जाए, तो शासन व्यवस्था अधिक उत्तरदायी बन सकती है।

प्रशिक्षण और कार्यशालाएं भी इस दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। संयुक्त सेमिनार, मीडिया-प्रशासन संवाद मंच और संकट प्रबंधन अभ्यास दोनों पक्षों को एक-दूसरे की कार्यप्रणाली समझने का अवसर देते हैं। इससे आपसी विश्वास बढ़ता है और गलतफहमियां कम होती हैं।

अंततः, प्रेस और अधिकारियों के बीच सामंजस्य केवल संस्थागत आवश्यकता नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। जब मीडिया स्वतंत्र, निष्पक्ष और जिम्मेदार होगी तथा प्रशासन पारदर्शी, संवेदनशील और जवाबदेह होगा, तभी जनता का भरोसा मजबूत रहेगा। लोकतंत्र की सेहत इसी भरोसे पर टिकी है। अतः समय की मांग है कि दोनों पक्ष प्रतिस्पर्धा नहीं, सहयोग की भावना से कार्य करें, ताकि शासन और समाज के बीच विश्वास का पुल और मजबूत हो सके।

कचरे का सही निस्तारण : जनस्वास्थ्य की पहली शर्त

कपिल चौधरी
नोएडा व्यूज़

स्वच्छता केवल सड़कों और भवनों की सफाई तक सीमित विषय नहीं है, बल्कि यह सीधे-सीधे जनस्वास्थ्य, पर्यावरण संतुलन और भविष्य की पीढ़ियों की सुरक्षा से जुड़ा हुआ प्रश्न है। आज देश के सामने सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है बायो-मेडिकल कचरे का सुरक्षित और वैज्ञानिक निस्तारण। अस्पतालों, क्लीनिकों, पैथोलॉजी लैबों और दवा निर्माण इकाइयों से प्रतिदिन निकलने वाला यह कचरा यदि सही ढंग से प्रबंधित न हो, तो यह संक्रमण, प्रदूषण और एंटीमाइक्रोबियल रेसिस्टेंस जैसी वैश्विक समस्या को जन्म देता है।

चिंताजनक तथ्य यह है कि चिकित्सा सेवाओं के विस्तार के साथ बायो-मेडिकल कचरे की मात्रा तेजी से बढ़ रही है, लेकिन उसके अनुरूप प्रबंधन व्यवस्था अभी भी कई स्थानों पर कमजोर है। प्रयोग की गई सिरिंज, संक्रमित पट्टियाँ, दवाओं के अवशेष, रासायनिक पदार्थ और लैब वेस्ट यदि बिना उपचार के सामान्य कचरे में मिल जाएँ, तो वे मिट्टी, जल स्रोतों और वायु को प्रदूषित कर देते हैं। यह प्रदूषण धीरे-धीरे खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर मानव शरीर तक पहुँचता है और गंभीर स्वास्थ्य संकट उत्पन्न करता है।

सबसे बड़ा खतरा यह है कि एंटीबायोटिक दवाओं और संक्रमणकारी तत्वों का अनियंत्रित फैलाव बैक्टीरिया को अधिक प्रतिरोधक बना रहा है। परिणामस्वरूप सामान्य संक्रमण भी उपचार से बाहर होते जा रहे हैं। यह स्थिति भविष्य में ऐसी चिकित्सा चुनौती बन सकती है, जहाँ साधारण बीमारियाँ भी जानलेवा सिद्ध हों।

कानून और नियमों का अभाव नहीं है। बायो-मेडिकल वेस्ट प्रबंधन के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश बनाए गए हैं, जिनमें कचरे का पृथक्करण, सुरक्षित संग्रहण, परिवहन, उपचार और वैज्ञानिक निस्तारण अनिवार्य किया गया है। समस्या इन नियमों के क्रियान्वयन में ढिलाई की है। अनेक छोटे स्वास्थ्य केंद्रों में जागरूकता, प्रशिक्षण और निगरानी की कमी के कारण कचरे का निस्तारण निर्धारित मानकों के अनुरूप नहीं हो पाता। अब समय आ गया है कि इस मुद्दे को केवल प्रशासनिक जिम्मेदारी न मानकर सामाजिक दायित्व के रूप में देखा जाए। स्वास्थ्य संस्थानों को आधुनिक वेस्ट-ट्रीटमेंट तकनीकों को अपनाना होगा, कर्मचारियों को नियमित प्रशिक्षण देना होगा और जवाबदेही तय करनी होगी। स्थानीय निकायों को निगरानी तंत्र मजबूत करना चाहिए, जबकि आम नागरिकों को भी चिकित्सा कचरे को सामान्य कचरे से अलग रखने के प्रति जागरूक होना होगा।

स्वस्थ समाज का निर्माण केवल बेहतर अस्पतालों से नहीं, बल्कि सुरक्षित पर्यावरण से होता है। यदि हम आज कचरे के सही निस्तारण को प्राथमिकता नहीं देंगे, तो कल इसका दुष्परिणाम हमारी सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था पर भारी पड़ेगा। स्वच्छता का वास्तविक अर्थ है ऐसी व्यवस्था, जो जीवन को सुरक्षित रखे। यही हमारे विकास की सच्ची कसौटी भी है।

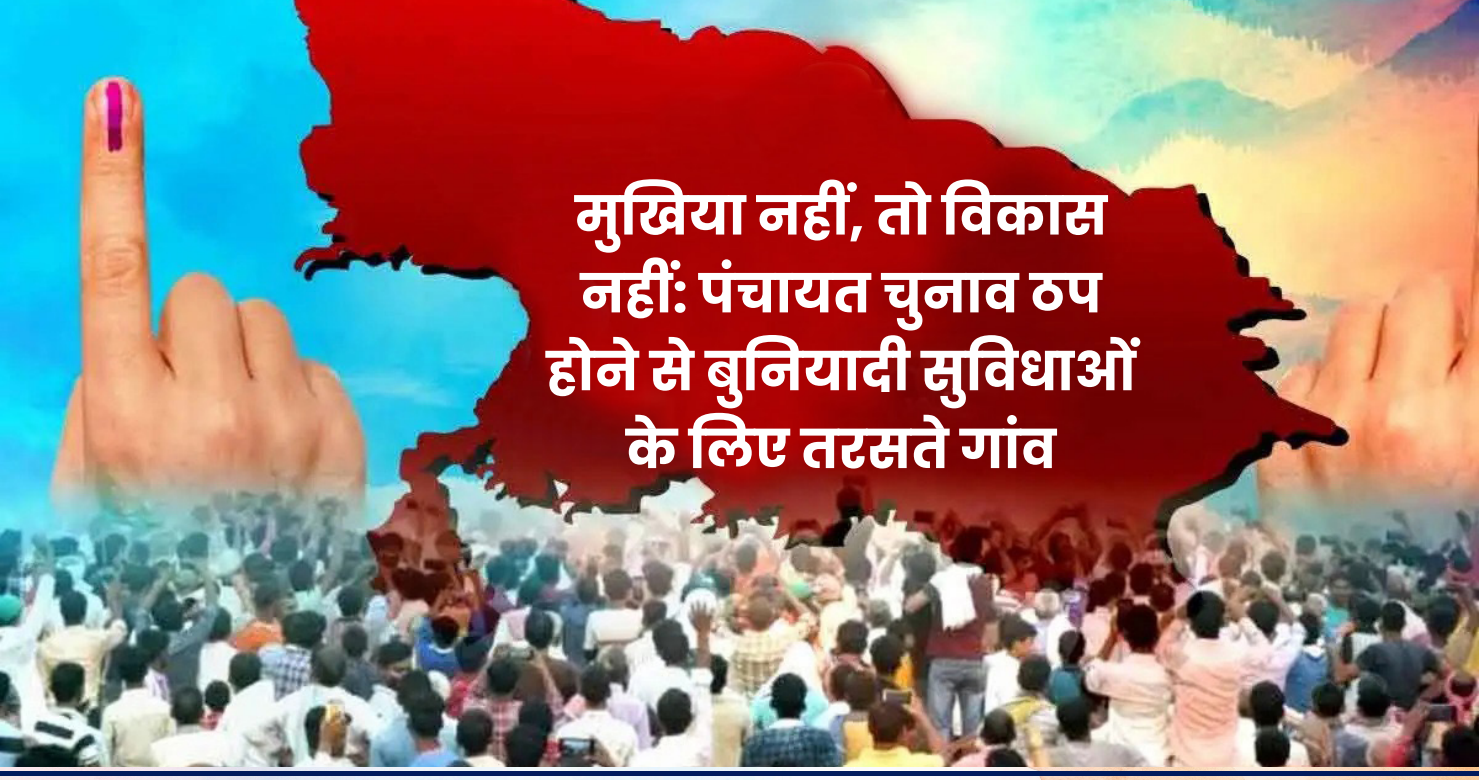

मुखिया नहीं, तो विकास नहीं: पंचायत चुनाव ठप होने से बुनियादी सुविधाओं के लिए तरसते गांव

मुजफ्फर अली
सत्य दर्पण

गौतम बुद्ध नगर में पंचायत चुनाव न होने के कारण ग्रामीण इलाकों में विकास पूरी तरह से ठप हो गया है। जब जन-प्रतिनिधि (सरपंच/प्रधान) नहीं होते, तब प्रशासनिक उदासीनता के कारण सड़कों की मरम्मत, नालियों की सफाई, और कूड़ा प्रबंधन जैसे मुद्दे नदारद हो जाते हैं। स्थानीय स्वशासन की कमी से गांवों में गंदगी, जलभराव और बुनियादी सुविधाओं का अभाव बढ़ जाता है, जिससे ग्रामीणों को भारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

बिना चुनाव वाले गांव में सड़क, बिजली और पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं का विकास रुक जाता है क्योंकि प्रशासनिक अधिकारियों पर विकास कार्यों को लेकर वही दबाव नहीं होता जो चुने हुए प्रतिनिधियों पर होता है। छोटे-छोटे कार्यों के लिए ग्रामीणों को ब्लॉक या जिला स्तर के दफ्तरों के चक्कर काटने पड़ते हैं और ग्राम प्रधान और जिला पंचायत सदस्य न होने का सीधा मतलब है कि अब इन गांवों की समस्याओं का निपटारा सीधे तौर पर नहीं किया जाता है और गांवों में प्रधानी का चुनाव खत्म होने के बाद विकास की रफ्तार पर ब्रेक लग जाता है और पूरे देश में विकास की आंधी बह रही है हर तरफ विकास का ढिंढोरा पीटा जा रहा है लेकिन गौतम बुद्ध नगर ज़िला विकास को तरस रहा है गांव में एक मुखिया इसलिए चुना जाता है ताकि गांव की देखरेख हो सके गांव में किन-किन समस्या से लोग जूझ रहे हैं इसका सर्वे किया जाए सरकार के द्वारा जो योजनाएं चलाई जा रहे हैं उन योजना के बारे में ग्रामीणों को बताना और योजनाओं का लाभ दिलाना ग्राम पंचायत के मुखिया की जिम्मेदारी होती है लेकिन यहां पर देखा गया है कि गाँव के मुखिया ही नहीं है

यो जनाएं अक्सर कागजों तक ही सीमित रहती हैं और उन्हें सही तरीके से लागू नहीं किया जाता अगर किसी दूसरे बाहर गांव से मेहमान आए तो रास्तो को देखकर बस यही पूछता है कि इस गांव का मुखिया कैसा है जिसको ग्रामीणों की परवाह ही नहीं है मेहमान की बात सुनकर गांव वाले खामोश हो जाते हैं और मायूसी से उस मेहमान की तरफ देखते हैं और सोचते हैं गांव का विकास ही गांव के मुखिया की पहचान होती है मगर मेरे गांव में कोई मुखिया ही नहीं है वो इसलिए कि इस गांव में कोई चुनाव नहीं होता, ज़िला पंचायत, ग्राम प्रधान का चुनाव लगभग 15 साल से बंद है जिसकी वजह से इस जिले का विकास रुका हुआ है एक तरफ़ जहाँ भारत "डिजिटल इंडिया" की ओर तेजी से दौड़ रहा है वहीं दूसरी और गौतम बुद्ध नगर जिले के गांवों में ग्राम प्रधान, ज़िला पंचायत का चुनाव बंद है सरकार के द्वारा चलायी गयी योजनायें और उठाये गये कदमों के बारे में गाँव के लोग जान नहीं पाते गाँव और ग्रामीणों का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है जब तक इन समस्याओं को दूर करने के लिए गांवों में विकास कार्य नहीं होगा तब तक हम विकसित भारत का सपना तो देख सकते हैं मगर इस सपने को पूरा नहीं कर सकते ग्रामीण विकास के लिए आने वाला बजट सही समय पर सही जगह खर्च नहीं हो पाता और स्थानीय लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए समय पर पंचायत चुनाव होना अत्यंत आवश्यक है ताकि ग्रामीण विकास की गति बनी रहे और गंदगी जैसी समस्याओं से निजात मिल सके और हमारा शहर हरा भरा रहें

एप्सटिन फाइल्स : शर्म, सन्नाटा और हमारी सामूहिक विफलता

सत्ता-संरक्षित अपराधों के सामने समाज, मीडिया और न्याय की सामूहिक परीक्षा

प्रवीन कुमार सैन
विधान केसरी

इतिहास के कुछ क्षण ऐसे होते हैं जब सभ्यता अपने ही आईने में झाँकने से डरने लगती है। आज हम ठीक उसी मोड़ पर खड़े हैं। जिन कांडों का खुलासा हो रहा है-जिनके वीडियो, दस्तावेज और गवाह सार्वजनिक हो चुके हैं-वे महज अपराध नहीं हैं, बल्कि मानवता के विरुद्ध सुनियोजित, संरक्षित और सत्ता-समर्थित हमले हैं। इन घटनाओं की भयावहता इतनी गहरी है कि शब्द भी लड़खड़ा जाते हैं। फिर भी समाज इन्हें कंटेंट की तरह उपभोग कर रहा है-चाव, रोमांच और क्षणिक घृणा के साथ और फिर अगली सनसनी की ओर बढ़ जाता है। यह कोई नई कहानी नहीं है। हर बड़े घोटाले, हर सामूहिक अपराध के बाद यही क्रम दोहराया गया है-पहले इनकार, फिर आंशिक स्वीकारोक्ति, उसके बाद माफी या इस्तीफा, और अंततः कम्पैरिटिवली बेहतर का आत्मसंतोष। मानो न्याय कोई तुलनात्मक पैमाना हो, जहाँ कम बुरा होना ही अच्छा होने का प्रमाण बन जाए। पर असली सवाल कहीं गहरा है जब अपराध हो रहे थे, तब आत्मा कहाँ थी? क्या नैतिकता केवल कैमरों के सामने ही जागती है? इन कांडों की सबसे भयावह परत सत्ता से जुड़ी है। उच्चतम पदों पर बैठे लोग-जिन्हें समाज ईश्वरतुल्य मानता है-जब दोषियों से संवाद करते, उन्हें संरक्षण देते, उनसे लाभ लेते या उनके लिए रास्ते बनाते पाए जाते हैं, तब लोकतंत्र की बुनियाद हिल जाती है। यह व्यक्तिगत नैतिक पतन नहीं, बल्कि संस्थागत अपराध है। क्योंकि जब अपराध को व्यवस्था का संरक्षण मिलता है, तब वह अपवाद नहीं रहता-वह एक प्रणाली बन जाता है। मीडिया की भूमिका यहाँ निर्णायक होनी चाहिए थी। लेकिन अक्सर वह भी दो ध्रुवों में बँटी नजर आती है-एक ओर सनसनी, दूसरी ओर चुप्पी। सनसनी पीड़ितों की गरिमा को रौंदती है, जबकि चुप्पी अपराधियों को समय और सुरक्षा देती है। टीआरपी, क्लिक और ट्रेंड की दौड़ में सत्य दम तोड़ देता है। नतीजा यह कि जनता को तथ्य नहीं, भावनात्मक स्वस्थ समाज का निर्माण केवल बेहतर अस्पतालों से नहीं, बल्कि सुरक्षित पर्यावरण से होता है। यदि हम आज कचरे के सही निस्तारण को प्राथमिकता नहीं देंगे, तो कल इसका दुष्परिणाम हमारी सार्वजनिक स्वास्थ्य

व्यवस्था पर भारी पड़ेगा। स्वच्छता का वास्तविक अर्थ है ऐसी व्यवस्था, जो जीवन को सुरक्षित रखे। यही हमारे विकास की सच्ची कसौटी भी है।

झटके मिलते हैं-और झटकों से स्थायी सामाजिक कार्रवाई कभी जन्म नहीं लेती। कानून और जाँच एजेंसियों की स्थिति भी कोई आश्वस्ति नहीं देती। धीमी जाँच, अधिकार क्षेत्र की उलझनें, राजनीतिक दबाव और अंतहीन प्रक्रियाएँ ये सब मिलकर न्याय को टालने की एक सुव्यवस्थित मशीन बना देते हैं। कहा जाता है कि न्याय में देरी, न्याय से इनकार के समान होती है, यहाँ यह कहावत एक कड़वी सच्चाई बनकर सामने आती है। पीड़ित थक जाते हैं, गवाह डर जाते हैं और अपराधी समय के साथ और अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं। सबसे असहज प्रश्न फिर भी आम जनता से जुड़ा है। क्या सचमुच हमें लकवा मार गया है? या हमें इस तरह ढाला गया है कि हम क्रोधित तो हों, पर संगठित न हो सकें? सोशल मीडिया हमें आवाज देता है, लेकिन दिशा नहीं। हम पोस्ट करते हैं, साझा करते हैं, गालियाँ देते हैं और यह मान लेते हैं कि हमने अपना कर्तव्य निभा दिया। वास्तविक दुनिया में उतरने का धैर्य, जोखिम और निरंतरता-ये सब दुर्लभ होते चले गए हैं। यह भी एक सच है कि जनता को थकाने की बाकायदा रणनीति अपनाई जाती है। सूचनाओं की बाढ़, विरोधाभासी दावे, फर्जी खबरें और आधे-अधूरे सच-इन सबके जरिये भ्रम पैदा किया जाता है। और भ्रम से निष्क्रियता जन्म लेती है। निष्क्रिय समाज अपराधियों के लिए सबसे सुरक्षित वातावरण होता है। कुछ देशों में माफियाँ माँगी जा रही हैं, कहीं इस्तीफे दिए जा रहे हैं और इन्हें बड़ी उपलब्धि की तरह प्रस्तुत किया जा रहा है। लेकिन माफी तभी मायने रखती है जब उसके साथ जवाबदेही हो-कानूनी कार्रवाई, संपत्ति की जब्ती, नेटवर्क का खुलासा और स्थायी संस्थागत सुधार। केवल चेहरे बदल देने से व्यवस्था नहीं बदलती। इस्तीफा न्याय नहीं है, वह अधिकतम उसकी शुरुआत हो सकता है। इस पूरे परिदृश्य में सबसे अधिक उपेक्षित पक्ष पीड़ितों का है। उनकी कहानियाँ, उनका दर्द और उनका पुनर्वास-सब कुछ हाशिये पर धकेल दिया जाता है। जबकि

न्याय का अर्थ केवल सजा नहीं है, न्याय का अर्थ है पीड़ित की जिंदगी को दोबारा खड़ा करना। काउंसलिंग, चिकित्सा, शिक्षा, रोजगार और गवाह सुरक्षा ये सब उतने ही आवश्यक हैं जितनी अदालत की कार्यवाही। इनके बिना न्याय हमेशा अधूरा रहेगा। तो रास्ता क्या है? प्रतिशोध नहीं। हिंसा की कामना हमें उन दरिंदों से अलग नहीं बनाती जिनसे हम घृणा करते हैं। सभ्यता की जीत क्रूरता से नहीं, बल्कि जवाबदेही से होती है। इसके लिए कुछ बुनियादी बिंदुओं पर समाज को एकजुट होना होगा। पहला, स्वतंत्र और अंतरराष्ट्रीय जाँच, क्योंकि सीमा पार और सत्ता-समर्थित अपराधों में केवल राष्ट्रीय एजेंसियाँ पर्याप्त नहीं होतीं। दूसरा, पूर्ण प्रकटीकरण-नाम, पद, नेटवर्क और वित्तीय लेन-देन का सार्वजनिक खुलासा। तीसरा, कानूनी सुधार-विशेष अदालतें, समयबद्ध सुनवाई और मजबूत गवाह सुरक्षा कानून। चौथा, जिम्मेदार मीडिया, जो पीड़ित-केंद्रित, तथ्यपरक और निरंतर रिपोर्टिंग करे। पाँचवाँ, नागरिक एकजुटता-शांतिपूर्ण, संगठित और लगातार दबाव। क्योंकि बदलाव किसी एक पोस्ट से नहीं, बल्कि निरंतरता से आता है। अंततः यह लड़ाई नैतिकता की है। हर समाज को कभी न कभी यह तय करना पड़ता है कि वह सुविधा चुनेगा या सत्य। सुविधा हमें सुला देती है, जबकि सत्य हमें बेचैन करता है-और इतिहास हमेशा उसी बेचैनी से आगे बढ़ता है। लानत दरिंदों पर तो बनती है। लेकिन इतिहास हमें इस आधार पर परखेगा कि क्या हमने अपने आक्रोश को क्षणिक नफरत में गँवा दिया, या उसे परिवर्तन की संगठित ताकत में बदला। चुप्पी अब विकल्प नहीं है। देर से सही, पर न्याय आना चाहिए और ऐसा न्याय, जो केवल दोषियों को दंडित न करे, बल्कि भविष्य को भी सुरक्षित बनाए।

यही इस समय की सबसे बड़ी माँग है। और यही हमारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी भी।

पत्रकार की सुरक्षा और सम्मान: एक अनकही ज़रूरत

संदीप सोखल
ख़ास आवाज़

पत्रकार होना केवल एक पेशा नहीं है, बल्कि यह समाज के प्रति एक गहरी जिम्मेदारी है। यह वह दायित्व है जिसमें सच को सामने लाने के लिए कई बार अपनी सुविधा, अपनी शांति और कभी-कभी अपनी सुरक्षा तक को दांव पर लगाना पड़ता है। जब पूरा शहर आराम कर रहा होता है, तब भी एक पत्रकार सच्चाई की तलाश में काम कर रहा होता है, क्योंकि उसे पता है कि उसकी कलम रुक गई तो किसी की आवाज़ दब सकती है।

पत्रकार समाज की वह आवाज़ है जो अक्सर सुनी नहीं जाती। वह किसान की पीड़ा को शब्द देता है, मज़दूर की मेहनत को पहचान दिलाता है और आम आदमी की उस चुप पीड़ा को सामने लाता है, जिसे कोई और सुनने को तैयार नहीं होता। लेकिन दुखद सच्चाई यह है कि जो व्यक्ति समाज की सुरक्षा और जागरूकता के लिए खड़ा रहता है, उसकी अपनी सुरक्षा और सम्मान को लेकर अक्सर गंभीरता नहीं दिखाई जाती। आज की पत्रकारिता ground reality से जुड़ी हुई है।

एक journalist अब सिर्फ़ काग़ज़ और कलम तक सीमित नहीं है। वह कैमरा, मोबाइल, माइक और digital platforms के साथ सीधे ज़मीनी हकीकत से जुड़ता है। ऐसे में उसे कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सच लिखने या दिखाने पर धमकियाँ मिलना, दबाव बनना, झूठे मामलों में फँसाया जाना या शारीरिक और मानसिक रूप से परेशान किया जाना अब असामान्य बात नहीं रह गई है। यह सब सिर्फ़ इसलिए होता है क्योंकि किसी ने सच बोलने की हिम्मत की। अक्सर जब journalist safety की बात होती है, तो इसे सिर्फ़ helmet, jacket या identity card तक सीमित कर दिया जाता है। जबकि असली सुरक्षा इससे कहीं आगे की चीज़ है। एक पत्रकार को कानूनी संरक्षण, प्रशासनिक सहयोग, press freedom और system पर भरोसे की ज़रूरत होती है। अगर कोई पत्रकार सच लिखने के बाद डर में जीने लगे, तो यह न सिर्फ़ उस व्यक्ति के लिए बल्कि पूरी पत्रकारिता के लिए चिंता का विषय है। सम्मान की बात करें तो पत्रकारों को शब्दों में तो लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, लेकिन व्यवहार में अक्सर यह सम्मान दिखाई नहीं देता। जब कोई पत्रकार सवाल पूछता है, तो उसे परेशान करने वाला समझ लिया जाता है। जब वह जवाब मांगता है, तो उस पर पक्षपाती होने का आरोप लग जाता है।

असल सम्मान तब होगा जब सवाल पूछना अपराध न समझा जाए, सच दिखाने पर विरोध नहीं बल्कि सहयोग मिले और पत्रकार को पहले एक इंसान के रूप में देखा जाए। Digital era ने पत्रकारिता को तेज़ और व्यापक तो बनाया है, लेकिन इसके साथ नई समस्याएँ भी आई हैं। fake news, online trolling और character assassination जैसी चीज़ें आज एक गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। एक journalist अगर सच्ची खबर लिखता है, तो उसे social media पर निशाना बनाया जाता है। यह मानसिक हिंसा का ऐसा रूप है, जिस पर आज भी समाज पर्याप्त संवेदनशील नहीं है। यह बात अक्सर भूल जाती है कि पत्रकार भी एक सामान्य इंसान होता है। उसका भी परिवार होता है, उसके भी बच्चे होते हैं और उसके भी सपने होते हैं। वह कोई मशीन नहीं है। वह बारिश में खड़े होकर रिपोर्ट करता है, तेज़ धूप में सड़कों पर चलता है और कई बार सीमित संसाधनों के बावजूद अपना काम करता है, सिर्फ़ इसलिए ताकि सच की आवाज़ दब न जाए और कलम चलती रहे। ऐसे समय में Greater Noida Journalist Press Club जैसी संस्थाओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। यह संस्था केवल एक संगठन नहीं, बल्कि पत्रकारों के लिए एक सुरक्षा कवच है। यह unity की ताकत देती है, ज़रूरत के समय आवाज़ उठाती है और पत्रकारों के सम्मान की ढाल बनती है। जब press club मज़बूत होता है, तो कोई भी पत्रकार खुद को अकेला महसूस नहीं करता। समाज की भी अपनी जिम्मेदारी है।

पत्रकार सिर्फ़ खबर नहीं देता, वह समाज का आईना होता है। अगर समाज चाहता है कि उसे सही और सच्ची जानकारी मिले, तो उसे भी पत्रकार के साथ खड़ा होना होगा। क्योंकि अगर आज पत्रकार सुरक्षित नहीं है, तो कल सच भी सुरक्षित नहीं रहेगा। अंत में यही कहा जा सकता है कि पत्रकार की सुरक्षा और सम्मान कोई विशेष मांग नहीं, बल्कि समय की ज़रूरत है। यह सिर्फ़ पत्रकारों के हित में नहीं, बल्कि पूरे लोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक है। जब एक पत्रकार बिना डर के लिख पाएगा, तभी समाज सच को पूरी सच्चाई के साथ पढ़ पाएगा। पत्रकार सुरक्षित है, तभी समाज वास्तव में सुरक्षित है।

एनटीपीसी
NTPC

दादरी

देश को रोशन और समाज को सशक्त बनाने हेतु प्रतिबद्ध- एनटीपीसी दादरी

नेशनल कैपिटल पावर स्टेशन, दादरी

नेता बनना है तो... पत्रकारिता का सम्मान करो

मनोज तोमर
भारत लाइव 24 न्यूज़

लोकतंत्र की सबसे मजबूत कड़ी स्थानीय पत्रकारिता है। गौतमबुद्धनगर हो या अन्य कोई जिला, छोटे-बड़े समाचार पत्र शहर की हर गली-मोहल्ले की खबर को प्रमुखता से उठाते हैं। उभरते हुए नेता, सामाजिक कार्यकर्ता या राजनीतिक महत्वाकांक्षी इन ही स्थानीय अखबारों के माध्यम से जनता तक पहुंचते हैं, अपनी गतिविधियों को प्रकाश में लाते हैं और 'फेमस' होने की दौड़ में आगे बढ़ते हैं। लेकिन जब बात आर्थिक सहयोग, विज्ञापन या छोटे-मोटे समर्थन की आती है, तो वही नेता अचानक 'आंखें चुराने' लगते हैं। फोन उठाना बंद, मैसेज का जवाब न देना, और त्योहारों के समय विज्ञापन मांगने पर गायब हो जाना-यह अब कोई नई बात नहीं रही।दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि खबर प्रकाशित कराने की इच्छा तो प्रबल रहती है, लेकिन संस्थान को मजबूत बनाने में योगदान देने से परहेज। 'पेड खबर' या प्रचार सामग्री भेजकर चमकना चाहते हैं, पर पत्रकार के साथ सहयोग का सवाल उठते ही बुराई शुरू कर देते हैं-'ये परेशान करता है', 'हमेशा पैसे मांगता है'। यह दोहरा व्यवहार न केवल शर्मनाक है, बल्कि लोकतंत्र की जड़ों को कमजोर करने वाला भी है।स्थानीय समाचार पत्र बड़े मीडिया हाउस की तरह विज्ञापन या सरकारी अनुदान पर निर्भर नहीं रहते। उनकी कमाई मुख्यतः स्थानीय व्यापारियों, छोटे उद्यमियों और राजनीतिक-सामाजिक संगठनों के सहयोग से होती है। जब नेता अपनी खबरें प्रमुखता से छपवाना चाहते हैं, तब वे भूल जाते हैं कि यह सहयोग द्विपक्षीय होता है। पत्रकार भी तो वही खबर प्रमुखता से प्रकाशित करता है, जो नेता की छवि चमकाने में मदद करती है। लेकिन जब संस्थान को आर्थिक रूप से मजबूत करने का समय आता है, तो चुप्पी या बहाने। हमारा विनम्र निवेदन उन सभी उभरते और छुटपुट नेताओं से है, जो लोकल मीडिया का इस्तेमाल तो करना चाहते हैं, पर उसका बोझ नहीं उठाना चाहते-यदि आप पत्रकारिता संस्थान को सहयोग नहीं दे सकते, तो अपनी खबरें भी न भेजें। सोशल मीडिया के युग में आपके पास फेसबुक, इंस्टाग्राम,
व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे मंच उपलब्ध हैं। वहां अपनी गतिविधियां साझा करें, स्वयं को चमकाएं। लेकिन स्थानीय अखबारों को केवल 'प्रचार का साधन' समझना और फिर सहयोग से मुंह मोड़ना निष्पक्ष पत्रकारिता के साथ अन्याय है। सच्चा नेता वही है, जो न केवल अपनी आवाज बुलंद करता है, बल्कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को भी मजबूत बनाने में योगदान देता है। आर्थिक सहयोग छोटा हो सकता है, लेकिन उसका महत्व बहुत बड़ा है। यदि सहयोग संभव नहीं, तो कम से कम सम्मान और शालीनता तो बरती जाए। बुराई करने, बदनाम करने या परेशान करने का आरोप लगाने से पहले आत्ममंथन जरूरी है। स्थानीय पत्रकारिता तभी फल-फूल सकती है, जब समाज के सभी वर्ग खासकर वे जो इससे सबसे अधिक लाभान्वित होते हैं-उसके प्रति जिम्मेदार और सहयोगी बनें। आइए, हम सब मिलकर एक स्वस्थ, निष्पक्ष और मजबूत स्थानीय मीडिया की नींव रखें। यही सच्ची राजनीतिक शालीनता होगी।

AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)शक्ति क्या है?

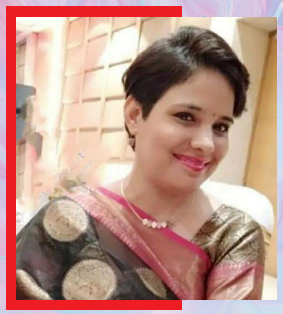

रेखा गुर्जर
संस्थापक - गुर्जरी माता पन्नाधाय ट्रस्ट

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) शक्तिशाली तकनीकों का एक व्यापक समूह प्रदान करती है जो उद्योगों को बदल रही है और व्यवसायों के लिए नए अवसर खोल रही है। यहां एआई की कुछ प्रमुख क्षमताएं दी गई हैं जिनका लाभ उठाकर आप नवाचार कर सकते हैं और अपने संचालन को बढ़ा सकते हैं।

छवि निर्माण

एआई सरल पाठ विवरणों को सेकंडों में उच्च-गुणवत्ता वाली, यथार्थवादी छवियों में बदल देता है। उदाहरण के लिए, "पहाड़ों पर सूर्यास्त" जैसे संकेत इनपुट करके, सामग्री निर्माण प्रक्रिया में नाटकीय रूप से तेजी आ रही है एआई तुरंत आश्चर्यजनक दृश्य उत्पन्न कर सकता है। यह अभूतपूर्व तकनीक विपणन, मनोरंजन और डिज़ाइन जैसे रचनात्मक उद्योगों में क्रांति ला रही है, जिससे

एआई ईमेल जैसे संक्षिप्त सामग्री से लेकर जटिल रिपोर्ट तक, मानव-समान पाठ स्वचालित रूप से उत्पन्न कर सकता है। ग्राहक सहायता, विपणन और सामग्री निर्माण में व्यापक रूप से अपनाई गई यह तकनीक लेखन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करके दक्षता बढ़ाती है और बहुमूल्य समय बचाती है

वाक् निर्माण और पहचान

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) द्वारा संचालित वाक् सृजन से स्वाभाविक, मानव-समान ध्वनि उत्पन्न होती है, जबकि वाक् पहचान मशीनों को बोले गए शब्दों को समझने और संसाधित करने में सक्षम बनाती है। ये प्रौद्योगिकियाँ एलेक्सा जैसे वर्चुअल असिस्टेंट के माध्यम से निर्बाध, ध्वनि-सक्रिय अनुभव प्रदान करने, ग्राहक सेवा, स्मार्ट उपकरणों और अभिगम्यता समाधानों को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मुंह से निकली दवा: शब्द कैसे हमारे मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

अम्बाडीपुड़ी लक्ष्मी
संस्थापक, साई अक्षरधाम विद्या पीठ

"एक स्नेहपूर्ण शब्द छोटी-सी दवा की तरह होता है सरल, निःशुल्क और इतनी प्रभावशाली कि किसी अदृश्य घाव को भी भर सकता है।" तेज़ रफ्तार, प्रतिस्पर्धा और निरंतर जुड़ी दुनिया में आज के छात्र कई ऐसे भावनात्मक बोझ ढो रहे हैं, जो दिखाई नहीं देते। आधुनिक शिक्षा जहाँ ज्ञान और कौशल पर ज़ोर देती है, वहीं छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर सबसे गहरा प्रभाव एक साधारण चीज़ का होता है — हमारे शब्दों का।

आज के छात्र शैक्षणिक दबाव, सामाजिक तुलना और परिवार व समाज की अपेक्षाओं से जूझ रहे हैं। सोशल मीडिया ने इस दबाव को और बढ़ा दिया है, जहाँ लाइक, कमेंट और ऑनलाइन राय आत्मसम्मान को प्रभावित करती हैं। ऐसे माहौल में नकारात्मक टिप्पणियाँ या कठोर आलोचना आत्मविश्वास और मानसिक स्वास्थ्य को गहरी चोट पहुँचा सकती हैं। एक कड़वा वाक्य दिनों तक छात्र के मन में गूंज सकता है, जबकि कुछ उत्साहवर्धक शब्द उसकी प्रेरणा और आशा को फिर से जगा सकते हैं।

कक्षा एक ऐसा सशक्त स्थान है जहाँ भाषा आत्म-विश्वास का निर्माण करती है। जब शिक्षक कहते हैं, "अच्छा प्रयास," "तुम और बेहतर कर सकते हो," या "मुझे तुम पर विश्वास है," तो छात्र स्वयं को सम्मानित और सक्षम महसूस करते हैं। ऐसे शब्द असफलता के डर को कम करते हैं और सीखने में सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देते हैं। इसके विपरीत, निरंतर तुलना या आलोचना चिंता को जन्म देती है और सीखने की इच्छा को कमजोर कर देती है।

साथियों के बीच संवाद भी आज की पीढ़ी के मानसिक स्वास्थ्य में अहम भूमिका निभाता है। छात्र जितना आमने-सामने संवाद करते हैं, उतना ही टेक्स्ट, सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर भी जुड़े रहते हैं। जहाँ साइबर बुलिंग और असंवेदनशील टिप्पणियाँ भावनात्मक नुकसान पहुँचा सकती हैं, वहीं सहयोगी और सहानुभूतिपूर्ण संदेश अपनापन और भरोसा बढ़ाते हैं। एक साधारण-सा "तुमने अच्छा किया" या "मैं मदद के लिए हूँ" किसी का पूरा दिन बेहतर बना सकता है।

सकारात्मक संवाद केवल भावनाओं को ही नहीं सँवारता, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को भी बेहतर बनाता है। जो छात्र स्वयं को समर्थित महसूस करते हैं, वे सवाल पूछने, अपने विचार साझा करने और नए प्रयास करने से नहीं डरते। ऐसा वातावरण रचनात्मकता, टीमवर्क और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित करता है — जो आधुनिक दुनिया में सफलता के लिए आवश्यक गुण हैं।

विद्यालय सकारात्मक संवाद की संस्कृति को बढ़ावा दे सकते हैं, जैसे सम्मानजनक बातचीत को प्रोत्साहित करना, एंटी-बुलिंग नीतियाँ लागू करना और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कार्यक्रम आयोजित करना। कृतज्ञता अभ्यास, सहपाठी प्रशंसा बोर्ड और आत्म-चिंतन लेखन जैसी गतिविधियाँ छात्रों में सहानुभूति और करुणा के महत्व को समझने में मदद करती हैं।

अभिभावकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। घर पर सहायक और संवेदनशील बातचीत सुरक्षा और समझ का एहसास कराती है। जब छात्र बिना किसी निर्णय के सुने जाते हैं, तो उनमें आत्मविश्वास, सहनशक्ति और भावनात्मक मजबूती विकसित होती है।

डिजिटल युग में सोच-समझकर संवाद करना पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है। शब्द रिश्तों को आकार देते हैं, आत्म-विश्वास को प्रभावित करते हैं और मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डालते हैं। यदि इन्हें समझदारी से प्रयोग किया जाए, तो ये आत्मबल को बढ़ा सकते हैं और सहायक शैक्षणिक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं।

निष्कर्षतः
छात्रों को जिस दवा की सबसे अधिक आवश्यकता होती है, वह अक्सर उन शब्दों में छिपी होती है जिन्हें वे प्रतिदिन सुनते और बोलते हैं। दयालुता, प्रोत्साहन और सहानुभूति को अपनाकर हम ऐसे कक्षा-कक्ष और समुदाय बना सकते हैं जहाँ हर छात्र स्वयं को मूल्यवान और मानसिक रूप से सशक्त महसूस करे। कई बार सही समय पर बोले गए सही शब्द, हमारी कल्पना से कहीं अधिक गहरा उपचार कर सकते हैं।

संघर्ष के दिनों में साथ: सफलता से पहले मिलने वाला भरोसा ही असली ताकत है

नेहा भड़ाना
एसएससी परीक्षार्थी

सरकारी नौकरी की तैयारी करने वाला हर छात्र एक उम्मीद के साथ शुरुआत करता है—पढ़ाई करूंगा, परीक्षा दूंगा और एक दिन चयन सूची में अपना नाम देखूंगा। लेकिन तैयारी का यह सफर जितना सपनों में आसान दिखता है, हकीकत में उतना ही कठिन और धैर्य की परीक्षा लेने वाला होता है। इस रास्ते पर सबसे पहले स्वागत सफलता नहीं, बल्कि असफलता करती है।

पहली असफलता इंसान को झटका देती है, पर उम्मीद जिंदा रहती है—"अगली बार जरूर होगा।" दूसरी बार लगता है मेहनत कम रह गई। तीसरी, चौथी, पांचवीं बार जब परिणाम वैसा ही आता है, तब संघर्ष बाहर से ज्यादा भीतर शुरू होता है। किताबें वही रहती हैं, नोट्स वही रहते हैं, पढ़ने की मेज वही रहती है—पर मन बदल जाता है। अब शब्दों से ज्यादा चिंता दिखाई देती है। हर पन्ने के साथ एक अनकहा डर जुड़ जाता है—कहीं फिर से वही नतीजा न मिल जाए।

सबसे कठिन होता है समाज के सवालों का सामना करना। "इस बार भी नहीं हुआ?" यह छोटा सा वाक्य भीतर गहरा असर छोड़ जाता है। उस समय किसी रणनीति की नहीं, बल्कि भावनात्मक सहारे की जरूरत होती है। क्योंकि संघर्ष के दिनों में इंसान बाहर से मजबूत दिख सकता है, पर अंदर से लगातार टूट रहा होता है। खुद पर भरोसा डगमगाने लगता है, आत्मविश्वास कम होने लगता है।

विडंबना यह है कि जब सफलता मिल जाती है, तब दुनिया अपने आप साथ खड़ी हो जाती है। रिश्तेदार, दोस्त, परिचित—सब बधाइयां देने लगते हैं। कोई कहता है, "हमें तो पहले से पता था तुम कर लोगे।" लेकिन सच्चाई यह है कि सफलता के बाद साथ की उतनी जरूरत नहीं होती, जितनी उससे पहले होती है। नौकरी मिलने के बाद मिलने वाली बधाइयां खुशी देती हैं, पर संघर्ष के समय मिला एक भरोसे भरा वाक्य—"तुम कर सकते हो"—नई जान फूंक देता है।

संघर्ष के दिनों में साथ देने वाले लोग ही असली पूंजी होते हैं। सफलता के बाद साथ चलने वाले लोग दिखते हैं, पर संघर्ष में साथ निभाने वाले लोग दिल में बस जाते हैं। इसलिए साथ का मूल्य परिणाम से नहीं, समय से तय होता है। जो भरोसा सफलता से पहले मिला हो, वही इंसान को अंत तक लड़ने की ताकत देता है।

धर्म और देशभक्ति : इंसानियत से वतन तक

अफी हिंदुस्तानी
बेबाक आवाज़ टीवी

भारत महज़ नक़्शे पर बना हुआ एक मुल्क नहीं है, बल्कि यह जज़्बात, तहज़ीब, क़ुर्बानी और उम्मीदों से गढ़ी हुई एक ज़िंदा रूह है। सदियों से इस वतन की पहचान अलग-अलग मज़हबों, ज़ुबानों और रिवायतों के साथ रहने की रही है। इस पूरी तहज़ीब की बुनियाद दो अहम ताक़तों पर टिकी है—धर्म और देशभक्ति। जब ये दोनों सही समझ और सही नियत के साथ आगे बढ़ते हैं, तो इंसान भी बेहतर बनता है और मुल्क भी।

धर्म : दिलों को जोड़ने वाली रौशनी हैं

धर्म का मतलब सिर्फ़ मस्जिद, मंदिर, गिरजाघर या गुरुद्वारे तक सीमित नहीं है। असल धर्म वह है जो इंसान के किरदार में झलकता है। सच बोलना, किसी भूखे को खाना खिलाना, कमज़ोर की मदद करना, ज़ुल्म के सामने खामोश न रहना—यही सच्चा धर्म है।

हर मज़हब अमन, सब्र, रहम और मोहब्बत का पैग़ाम देता है। अगर धर्म इंसान को इंसान से दूर करे, तो समझ लेना चाहिए कि वह उसका ग़लत इस्तेमाल है। भारत की सबसे बड़ी खूबी यही रही है कि यहाँ अलग मज़हबों के लोग एक-दूसरे की इज़्ज़त करते हुए साथ रहते आए हैं।

देशभक्ति : वतन से मोहब्बत का अमल

देशभक्ति सिर्फ़ जज़्बाती नारों या सोशल मीडिया की पोस्टों तक सीमित नहीं है। सच्ची वतन-परस्ती वह है जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी में नज़र आए। जो इंसान ईमानदारी से टैक्स देता है, क़ानून का पालन करता है, सार्वजनिक संपत्ति की हिफ़ाज़त करता है और समाज में नफ़रत नहीं फैलाता—वही असल मायनों में देशभक्त है। वतन से मोहब्बत का मतलब है कि हम अपने फ़ायदों से ऊपर उठकर मुल्क के बारे में सोचें और उसकी तरक़्क़ी में अपना हिस्सा डालें।

धर्म और देशभक्ति का नाज़ुक तालमेल

धर्म और देशभक्ति का रिश्ता बहुत नाज़ुक है। जब धर्म इंसानियत की राह दिखाता है और देशभक्ति इत्तेहाद की, तब मुल्क मज़बूत होता है। मगर जब धर्म को सियासत, नफ़रत या तफ़रीक़ का हथियार बना दिया जाता है, तो वही चीज़ वतन को कमज़ोर कर देती है।

भारत का संविधान हर मज़हब को बराबर इज़्ज़त देता है। यही हमारी जम्हूरियत की जान है और यही सच्ची देशभक्ति का पैमाना भी।

आज़ादी की जद्दोजहद से मिलने वाला पैग़ाम

भारत की आज़ादी की तहरीक इस बात की सबसे बड़ी मिसाल है कि धर्म और देशभक्ति किस तरह साथ-साथ चल सकते हैं।

महात्मा गांधी ने सच और अहिंसा को अपनी ताक़त बनाया। उनके लिए धर्म का मतलब था—ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ और अमन।

जवाहरलाल नेहरू ने ऐसे भारत की तामीर की बात की जहाँ किसी इंसान को उसके मज़हब की वजह से पीछे न रखा जाए।

भगत सिंह ने साबित किया कि सच्ची देशभक्ति अंधी ताबेदारी नहीं, बल्कि ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ डटकर खड़े होना है।

देशभक्ति के असरदार ख़याल

आज जब दुनिया तेज़ी से बदल रही है, तब हमें यह समझना होगा कि नफ़रत और तफ़रीक़ हमें कमज़ोर बनाती है। हमारा वतन तभी आगे बढ़ेगा जब हम एक-दूसरे को शक की नज़र से नहीं, बल्कि अपने ही जैसे इंसान की तरह देखें। धर्म को दिल का मामला बनाएँ और देशभक्ति को अपने अमल में उतारें—यही आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है।

निष्कर्ष

धर्म और देशभक्ति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, बशर्ते उन्हें सही मायनों में समझा जाए। धर्म अगर इंसानियत सिखाए और देशभक्ति सबको साथ लेकर चले, तो भारत न सिर्फ़ मज़बूत होगा, बल्कि दुनिया के लिए अमन और भाईचारे की मिसाल भी बनेगा। आइए, हम सब मिलकर ऐसा भारत बनाएँ जहाँ धर्म नफ़रत नहीं, मोहब्बत सिखाए और देशभक्ति शोर नहीं, ज़िम्मेदारी बने—यही हमारे वतन के लिए सबसे बड़ी ख़िदमत है।

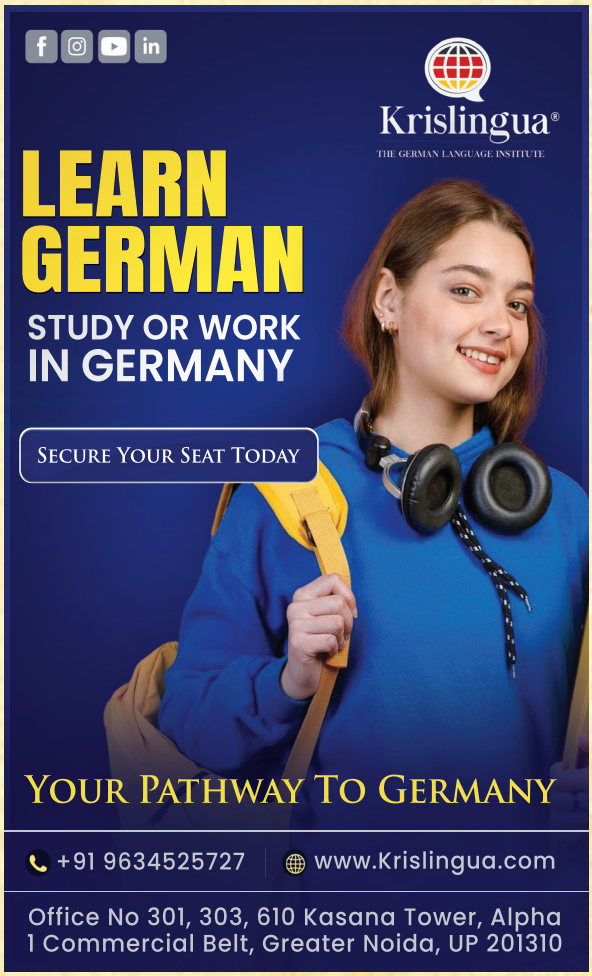

दिल्ली-एनसीआर में बढ़ता वायु प्रदूषण: 'गैस चैंबर' की ओर बढ़ते कदम?

शिवम मावी,
हिंदी न्याय आपका

देश की राजधानी नई दिल्ली और उससे सटे दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण का स्तर एक बार फिर खतरनाक श्रेणी में पहुंच गया है। सर्दियों की दस्तक के साथ ही आसमान पर धुंध की चादर और हवा में घुलते ज़हरीले कणों ने करोड़ों लोगों की सांसें मुश्किल कर दी हैं। एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI) लगातार 'बहुत खराब' से 'गंभीर' श्रेणी के बीच झूल रहा है।

यह एक दीर्घकालिक पर्यावरणीय संकट बन गया है, जो लाखों लोगों के स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और जीवनशैली को प्रभावित कर रहा है। 2026 में प्रवेश करते हुए, दिल्ली दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानियों में शीर्ष पर बनी हुई है, जहां पीएम2.5 (फाइन पार्टिकुलेट मैटर) का स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मानकों से कई गुना अधिक दर्ज किया जा रहा है। हाल के समाचारों और रिपोर्टों से पता चलता है कि सरकार की कोशिशों के बावजूद, प्रदूषण के स्तर में अपेक्षित सुधार नहीं हो रहा है, और जनता में असंतोष बढ़ता जा रहा है। इस लेख में हम प्रदूषण की वर्तमान स्थिति, कारणों, प्रभावों, सरकारी उपायों और चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा करेंगे, जो मुख्य रूप से हालिया समाचारों पर आधारित है।

क्यों बिगड़ती है हर साल हवा?

विशेषज्ञों के अनुसार, प्रदूषण बढ़ने के पीछे कई कारण एक साथ जिम्मेदार हैं। पड़ोसी राज्यों में पराली जलाना, वाहनों से निकलने वाला धुआं, निर्माण गतिविधियां, औद्योगिक उत्सर्जन और मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियां मिलकर स्थिति को और गंभीर बना देती हैं। हवा की गति कम होने और तापमान गिरने से प्रदूषक कण वातावरण में नीचे ही ठहर जाते हैं, जिससे स्मॉग की मोटी परत बन जाती है।

स्वास्थ्य पर गहरा असर

चिकित्सकों का कहना है कि इस जहरीली हवा का सबसे अधिक असर बच्चों, बुजुर्गों और सांस संबंधी बीमारियों से जूझ रहे लोगों पर पड़ रहा है। अस्थमा, एलर्जी, आंखों में जलन, गले में खराश और सांस लेने में तकलीफ के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी देखी जा रही है। अस्पतालों में श्वसन रोगियों की संख्या में इजाफा चिंता बढ़ा रहा है।

सरकार के कदम और चुनौतियां

प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान (GRAP) लागू किया गया है। निर्माण कार्यों पर रोक, स्कूलों को अस्थायी रूप से बंद करने, डीजल जनरेटर पर प्रतिबंध और पानी का छिड़काव जैसे कदम उठाए जा रहे हैं। साथ ही, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने और कार-पूलिंग की अपील की जा रही है। हालांकि विशेषज्ञ मानते हैं कि ये उपाय तात्कालिक राहत तो देते हैं, लेकिन दीर्घकालिक समाधान के लिए व्यापक नीति और सख्त अमल की जरूरत है।

समाधान की दिशा में क्या जरूरी?

पर्यावरणविदों का मानना है कि इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा, स्वच्छ ईंधन का उपयोग, हरित क्षेत्र का विस्तार और क्षेत्रीय स्तर पर समन्वित रणनीति ही स्थायी समाधान दे सकती है। आम नागरिकों की भागीदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है—कम दूरी के लिए पैदल या साइकिल का उपयोग, सार्वजनिक परिवहन को प्राथमिकता और अनावश्यक वाहन उपयोग से बचाव जैसे छोटे कदम बड़ा फर्क ला सकते हैं।

निष्कर्ष:

दिल्ली-एनसीआर में बढ़ता वायु प्रदूषण केवल पर्यावरणीय संकट नहीं, बल्कि जनस्वास्थ्य आपातस्थिति का संकेत है। अगर समय रहते ठोस और समन्वित कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाली पीढ़ियों को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। अब सवाल यह है—क्या हम साफ हवा के अधिकार को केवल बहस तक सीमित रखेंगे, या इसे प्राथमिकता बनाकर निर्णायक कदम उठाएंगे

NORTH WIND
ESTATES

UPRERAPRJ798312/05/2025
https://up-rera.in/Projects
COLLECTION ACCOUNT DETAILS:
NAME: NWEPL COLL AC FOR NORTHWIND SANCTUARY
PROJECT COLLECTION ACCOUNT NO.: 258881110909
Bank Name: INDUSIND BANK | **IFSC Code:** INDB0000513
Bank ADDRESS: Sector Omega 01/P2, Greater Noida

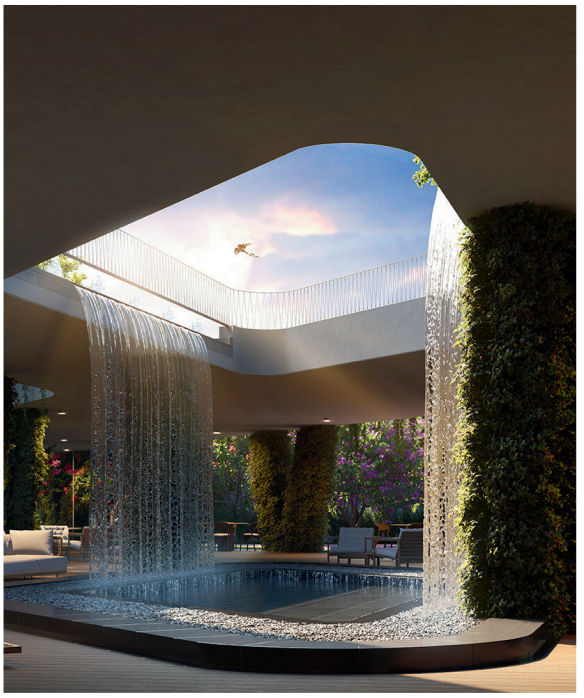

A NEW STANDARD OF **LOW DENSITY LIVING**

NorthWind
Sanctuary
Live Rare

SCAN TO KNOW MORE

₹ 2.27 CR*
ONWARDS

25 X 4
SMART PAY PLAN

3 BHK	4 BHK	4+S BHK
1895 SQ. FT. (176.05 SQ. MTR)	2431 SQ. FT. (225.84 SQ. MTR)	3750 SQ. FT (348.38 SQ. MTR)

Sector - PI, Greater Noida +91 888 111 0909

At North Wind Estates, we believe in creating more than just living spaces – we craft lifestyles. Located in the thriving hub of Greater Noida, North Wind Estates stands as a symbol of modern luxury, architectural brilliance, and serene living. Our projects blend contemporary design with sustainable practices, offering a harmonious balance of nature and urban convenience.

आधी रोटी, लाल कमल - सब कुछ लाल हो जाएगा

जब गौतम बुद्ध नगर की धरती से आज़ादी की लौ पूरे हिंदुस्तान में फैल गई

राव संजय भाटी,
सिटी वेब

भारत की आज़ादी केवल बड़े शहरों, नामी नेताओं या मशहूर युद्धक्षेत्रों की कहानी नहीं है। यह कहानी उन अनगिनत गांवों की भी है, जहाँ बिना नारे, बिना झंडे और बिना शोर के क्रांति की नींव रखी गई। आज के गौतम बुद्ध नगर (तत्कालीन दादरी–सिकंदराबाद क्षेत्र) की धरती भी उसी मौन लेकिन निर्णायक क्रांति की साक्षी रही है।

लाल कमल: एक फूल नहीं, क्रांति का संदेश

1857 की क्रांति के दौरान लाल कमल का फूल केवल एक प्रतीक नहीं था, बल्कि एक गुप्त संचार माध्यम था। यह फूल उन भारतीय पलटनों में घुमाया जाता था जो विद्रोह के लिए पूरी तरह तैयार थीं। एक पलटन से दूसरी पलटन तक जब लाल कमल पहुंचता, तो इसका अर्थ साफ होता अब समय आ गया है, मातृभूमि के लिए सब कुछ न्योछावर करने का।

गौतम बुद्ध नगर से जुड़े गांवों और छावनियों में भी यह संदेश मौन रूप से पहुंचा। इतिहास गवाह है कि यहां के ग्रामीण और सैनिक अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ भीतर ही भीतर संगठित हो चुके थे।

"सब कुछ लाल हो जाएगा" — डर से आज़ादी तक

ब्रिटिश नक्शों में लाल रंग से चिन्हित छावनियां यह संकेत थीं कि विद्रोह की आग फैल रही है। यह रंग अंग्रेजों के लिए खतरे का प्रतीक था, और भारतीयों के लिए आशा का। गौतम बुद्ध नगर के आसपास के गांवों में यह विश्वास गहराता गया कि अंग्रेजी सत्ता अब ज्यादा दिन नहीं टिकेगी।

रोटी का संदेश: गांव–गांव जागती आज़ादी

क्रांति केवल तलवारों से नहीं लड़ी गई। रोटी भी एक हथियार बनी। एक गांव से दूसरे गांव तक रोटी पहुंचाई जाती थी। चौकीदार उसमें से थोड़ा खाता, आगे बढ़ाता और फिर नई रोटी बनाकर अगली चौकी तक भेजी जाती। इसका सीधा संदेश था

जिस गांव से यह रोटी गुजरती है, वह गांव क्रांति के लिए तैयार है।

दादरी, लुक्सर, चिपियाना, जुनेदपुर, बिसरख जैसे क्षेत्रों के गांव इस गुप्त क्रांतिकारी नेटवर्क का हिस्सा बने। यह वही इलाका है जो आज गौतम बुद्ध नगर कहलाता है।

गुर्जर समाज और क्षेत्रीय बलिदान

इतिहासकार एम.के. गांधी अपनी पुस्तक "1857: क्रांति व क्रांतिधारा" में लिखते हैं कि "**गुर्जरों ने इसे अपनी जाति की क्रांति घोषित कर दिया था।**" गौतम बुद्ध नगर क्षेत्र में गुर्जर समाज ने अंग्रेजों के खिलाफ खुला और छुपा दोनों तरह का विरोध किया। जंगल, गांव, रास्ते—सब अंग्रेजों के लिए असुरक्षित हो चुके थे।

गुमनाम नायक, अमर योगदान

इस क्षेत्र के क्रांतिकारियों के नाम इतिहास की मुख्यधारा में भले न हों, लेकिन उनकी भूमिका निर्णायक थी। उन्होंने न तो तख्त चाहा, न पहचान उन्होंने सिर्फ आजादी चाही।

लाल कमल, रोटी और क्रांति

आज की पीढ़ी के नाम संदेश

आज जब हम हाईवे, मेट्रो और ऊंची इमारतों वाला गौतम बुद्ध नगर देखते हैं, तो याद रखना चाहिए यह धरती कभी लाल कमल और रोटी के संदेश से गूंजती थी। यहां के गांवों ने खामोशी से इतिहास रचा।

आजादी हमें विरासत में नहीं मिली, यह गौतम बुद्ध नगर की मिट्टी में बहाए गए खून, छुपाए गए फूल और बांटी गई रोटियों से बनी है।
यही इतिहास हमें सिखाता है अगर इरादे मजबूत हों, तो क्रांति बिना शोर के भी आ सकती है।

AI की एंट्री से क्रांति या खतरा?

फिल्मों की दुनिया में AI की एंट्री, क्रांति या कलाकारों के अस्तित्व पर क्या आएगा खतरा?

संदीप ओझा
नाउ नोएडा

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी AI आज केवल तकनीकी क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि फिल्म उद्योग में भी तेजी से अपनी जगह बना रहा है। दिल्ली में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट के दौरान फिल्म निर्माता शेखर कपूर ने एआई को तकनीकी क्षेत्र में बड़ी क्रांति बताया। उन्होंने कहा कि भविष्य में एआई की मदद से बड़े बजट की फिल्में बेहद कम लागत में बनाई जा सकेंगी। उनका मानना है कि जिस फिल्म को बनाने में आज 300 करोड़ रुपये खर्च होते हैं, उसे एआई के जरिए महज कुछ हजार रुपये में तैयार किया जा सकता है। इससे फिल्म निर्माण की प्रक्रिया तेज और सस्ती हो सकती है, लेकिन इसके साथ कलाकारों के भविष्य को लेकर चिंता भी बढ़ गई है।

क्या AI ले लेगा असली कलाकारों की जगह?

शेखर कपूर ने यह भी कहा कि यदि एआई कलाकारों की जगह लेने लगे तो वह कभी फीस नहीं बढ़ाएगा, न थकेगा और न ही बीमार होगा। यह बात फिल्म उद्योग के लिए एक बड़ी चुनौती बन सकती है। महान अभिनेता अमिताभ बच्चन ने भी एआई के बढ़ते प्रभाव को लेकर चिंता जताई थी। उन्होंने कहा कि एआई जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है और एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब वह कलाकारों की जगह ले ले। अभिषेक बच्चन ने भी एआई से डर जताते हुए कहा कि कलाकारों को इससे सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि यह उनकी भूमिका को प्रभावित कर सकता है। हालांकि उन्होंने यह भी माना कि एआई का उपयोग प्रोडक्शन, एनिमेशन और विजुअल इफेक्ट्स में बहुत फायदेमंद हो सकता है।

तकनीक से बदली कहानी की दिशा

भारतीय फिल्मों में AI का उपयोग धीरे-धीरे बढ़ रहा है। उदाहरण के तौर पर फिल्म रांझणा के एक संस्करण में एआई की मदद से कहानी का अंत बदल दिया गया था। इसके अलावा मलयालम फिल्म रेखाचित्रम में एआई के जरिए वरिष्ठ अभिनेता ममूटी को युवा रूप में दिखाया

गया, जिसे दर्शकों ने खूब पसंद किया। बाहुबली के अभिनेता सत्यराज को भी एआई की मदद से युवा दिखाया गया था। इन प्रयोगों से यह स्पष्ट है कि एआई फिल्म निर्माण में नए अवसर प्रदान कर रहा है। इससे लोकेशन, विजुअल इफेक्ट्स और विशेष दृश्यों को बनाना आसान हो गया है और फिल्म का बजट भी कम हो सकता है।

AI की सीमाओं पर बहस जारी

हालांकि एआई के उपयोग को लेकर सभी कलाकार एकमत नहीं हैं। अभिनेत्री नंदिता दास का मानना है कि एआई को समझदारी से उपयोग करना चाहिए, ताकि यह फिल्म निर्माण में मदद करे, न कि कलाकारों की जगह ले। हॉलीवुड के कई कलाकारों जैसे स्कारलेट जोहानसन और निकोलस केज ने भी एआई को लेकर चिंता जताई है। उनका कहना है कि एआई तकनीकी रूप से सक्षम हो सकता है, लेकिन वह मानवीय भावनाओं और रचनात्मकता की जगह नहीं ले सकता। अभिनय, लेखन और कला की गहराई केवल इंसान ही दे सकता है।

AI फिल्म उद्योग के लिए एक बड़ा अवसर और चुनौती दोनों है। यह तकनीक फिल्म निर्माण को आसान और प्रभावशाली बना सकती है, लेकिन कलाकारों की भूमिका और रचनात्मकता को सुरक्षित रखना भी उतना ही जरूरी है। आने वाले समय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि एआई और कलाकारों के बीच संतुलन कैसे बनाया जाता है, ताकि तकनीक और कला दोनों साथ मिलकर आगे बढ़ सकें।

गौतम बुद्ध नगर विकास का ग्लोबल मॉडल या किसानों की अधूरी दास्तान?

नरेंद्र भाटी
जनतंत्र टीवी

गौतम बुद्ध नगर आज देश के सबसे तेज़ी से विकसित हो रहे ज़िलों में शुमार है। ग्रेटर नोएडा के जेवर में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट बनकर तैयार है, जल्द ही उड़ानें शुरू होंगी। सेमीकंडक्टर यूनिट, मेडिकल डिवाइस पार्क, जापानी सिटी, कोरिया सिटी, इंटरनेशनल फिल्म सिटी, डेटा सेंटर पार्क, दिल्ली–मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर जैसी मेगा योजनाएँ इसी ज़िले की पहचान बन रही हैं। वही नोएडा–ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे, यमुना एक्सप्रेसवे, ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे और अन्य हाई-स्पीड कॉरिडोर विकास की रफ़्तार को और तेज़ कर रहे हैं। लेकिन इस चमकदार तस्वीर के पीछे एक तल्ख़ सवाल खड़ा है जिस किसान ने अपनी उपजाऊ ज़मीन देकर इस विकास की नींव रखी, वही किसान आज क्यों अपने हक़ के लिए दर-दर भटक रहा है?

इस विकास की नींव जिन किसानों की ज़मीनों पर रखी गई, उनकी पीड़ा, संघर्ष और अधूरी मांगें आज भी जिला प्रशासन और प्राधिकरणों के लिए एक असहज सच बनी हुई हैं। गौतम बुद्ध नगर जिले का गठन 6 सितंबर 1997 को किया गया। जिले का नाम भगवान गौतम बुद्ध के नाम पर रखा गया, ताकि इसे शांति, ज्ञान और समावेशी विकास का प्रतीक बनाया जा सके। लेकिन समय के साथ यह जिला विकास बनाम विस्थापन का सबसे बड़ा उदाहरण बन गया।

एक नारा जिसने सियासत बदला

“जमीन हमारी आपकी, नहीं किसी के बाप की” – यह नारा केवल विरोध नहीं था, यह अस्मिता की आवाज़ था। खेतों से उठी यह पुकार आंदोलन बनी, आंदोलन से नेतृत्व निकला और कई चेहरे सियासत के शिखर तक पहुंचे। लेकिन आज वही किसान पूछ रहा है—क्या उसे उसका इंसाफ़ मिला? गौतम बुद्ध नगर को आज देश के सबसे महत्वाकांक्षी विकास मॉडल के रूप में पेश किया जा रहा है। लेकिन सवाल यह है कि इस तरक्की की बुनियाद में जिन किसानों की ज़मीन शामिल है, क्या वे भी इस विकास के बराबर हिस्सेदार बने?

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट से लेकर सेमीकंडक्टर यूनिट, फिल्म सिटी और एक्सप्रेसवे की चमक... लेकिन जिन किसानों ने अपनी ज़मीन देकर यह तामीर संभव की, वही आज भी अपने हक़ और अपने बच्चों के मुस्तकबिल के लिए भटक रहे हैं।

ज़मीन की कहानी: अधिग्रहण से आवंटन तक

किसानों का आरोप है कि उनकी करोड़ों की उपजाऊ ज़मीनें अधिग्रहण के समय कम दरों पर ली गईं। बाद में वही ज़मीन विकसित कर ऊँची दरों पर बिल्डरों और कॉरपोरेट समूहों को आवंटित की गई।

"हमारी ज़मीन गई, शहर बस गया... मगर हमारे हिस्से में सिर्फ इंतज़ार आया।" एक तरफ़ सीमित मुआवज़ा, दूसरी तरफ़ प्राधिकरणों का भारी राजस्व। यह फ़र्क ही किसानों की असली नाराज़गी की वजह है।

रोज़गार का वादा और हक़ीक़त का फ़ासला

जब किसान से ज़मीन ली गई तो कहा गया कि स्थानीय युवाओं को रोजगार मिलेगा। लेकिन जिले के हजारो युवा आज भी रोजगार के लिए दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। जिले में बड़े उद्योगों, कंपनियों और संस्थानों में उनके बच्चों की हिस्सेदारी न के बराबर है। दबाव बढ़ने पर कुछ इलाकों में आईटीआई खोली गईं। सवाल यह है क्या 'एजुकेशन हब' कहलाने वाले गौतम बुद्ध नगर में किसानों के बच्चों के लिए सिर्फ़ आईटीआई ही भविष्य है? क्या उनके बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस या उच्च प्रशासनिक पदों तक नहीं पहुँच सकते?

"क्या किसानों के बच्चों को सिर्फ़ मज़दूरी के लिए तैयार किया जा रहा है, जबकि विकास की मलाई किसी और के हिस्से जा रही है?" क्या 'एजुकेशन हब' में किसानों के बच्चों के लिए सिर्फ आईटीआई ही मुक़द्दर है? जहाँ एक तरफ निजी विश्वविद्यालय, इंजीनियरिंग कॉलेज और अंतरराष्ट्रीय संस्थान मौजूद हैं,वही दूसरी तरफ क्या किसानों के बच्चों को समान अवसर मिले?

क्या उनके बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस या उच्च प्रशासनिक पदों तक पहुँच सकते हैं—या उन्हें केवल तकनीकी श्रम तक सीमित कर दिया गया? "जब शहर के बच्चों के लिए यूनिवर्सिटी है, तो किसानों के बच्चों के हिस्से में सिर्फ़ ट्रेनिंग सेंटर क्यों?" यह सवाल केवल रोजगार का नहीं, बल्कि सामाजिक इंसाफ़ और बराबरी का है।

किसान आंदोलन और अधूरी मांगें

भट्टा–पारसौल, घोड़ी बछेड़ा सहित जिले में किसानों के अन्य बड़े आंदोलन हुए लेकिन किसानों की मांगे आज भी अधूरी है। किसानों को आज भी बढ़ा हुआ मुआवज़ा, आवासीय भूखंड का आवंटन, बैक-लीज़ व्यवस्था, स्थानीय युवाओं को रोजगार में प्राथमिकता और गाँवों के समुचित विकास का इंतजार है। सरकारें बदलीं, अफ़सर बदले, लेकिन मसले जस के तस रहे।

नेतृत्व, सियासत और सवाल

जिले में दर्जनों किसान यूनियनें सक्रिय हैं। किसान आंदोलन के दौरान मंचों से बड़े-बड़े एलान होते हैं। लेकिन आरोप यह भी है कि कुछ चेहरे बाहर आंदोलन की अगुवाई करते हैं और दफ्तरों के भीतर अफ़सरशाही के सामने नर्म पड़ जाते हैं। अफसर के पैर छूते हैं उनको अपना रहनुमा हमदर्द बताते हैं लेकिन किसानों के अधिकारों के बजाय निजी स्वार्थ को वरीयता देते हैं। किसान नेताओं की आर्थिक स्थिति तो बदली है लेकिन खेत खोने वाला किसान आज भी अफसरों के दफ्तरों के चक्कर काट रहा है। जिले का आम किसान आज भी पूछ रहा है कि क्या उसकी लड़ाई उसके हक़ के लिए है या किसी के सियासी सफ़र के लिए?

विकास किसके लिए?

गौतम बुद्ध नगर आज वैश्विक निवेश, एयरपोर्ट और इंडस्ट्रियल कॉरिडोर की वजह से सुर्खियों में है। लेकिन जिन किसानों ने अपनी उपजाऊ ज़मीन देकर यह विकास संभव किया, वे आज भी अपने अधिकारों के लिए भटक रहे हैं। जिले के युवा रोजगार के इंतज़ार में हैं, किसान मुआवज़े और भूखंड के इंतज़ार में और विकास अपनी रफ्तार से आगे बढ़ रहा है।

अगर बुनियाद में ही बेइंसाफी की दरार हो, तो क्या उस इमारत को मुकम्मल विकास कहा जा सकता है? यही सवाल आज भी खेतों, चौपालों और प्राधिकरणों के दफ्तरों के बाहर गूंज रहा है और शायद यही गौतम बुद्ध नगर की सबसे बड़ी दास्तान है।

समस्त प्रिय क्षेत्र वासियों को
होली
की हार्दिक शुभकामनाएं
मा. डा. महेश शर्मा जी
सासंद गौ.बु. नगर एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार
तेजपाल सिंह नागर
विधायक दादरी
निवेदक – समस्त क्षेत्रवासी दादरी विधान सभा–62

RYAN
INTERNATIONAL SCHOOL
A timeless bond of learning together.
50 YEARS
EXCELLENCE IN EDUCATION
SINCE 1976
SCAN TO REGISTER
ADMISSIONS OPEN
8826088764
(CBSE)
GREATER NOIDA

AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)शक्ति क्या है?

हेमेन्द्र सिंह
दैनिक जनप्रवाद

21वीं सदी के तकनीकी परिवर्तन ने पत्रकारिता को गहराई से प्रभावित किया है। इस परिवर्तन के केंद्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ARTIFICIAL INTELLIGENCE) है, जिसने समाचार-संकलन, विश्लेषण, संपादन और प्रसार की पारंपरिक प्रक्रिया को नए सिरे से परिभाषित किया है। एआई अब पत्रकारिता के संप्रेषण-परिदृश्य का अहम हिस्सा बनती जा रही है।

एआई की सबसे बड़ी विशेषता उसकी गति, सटीकता और व्यापक विश्लेषण क्षमता है। बिग डेटा के माध्यम से सूचनाओं का त्वरित विश्लेषण, सांख्यिकीय प्रवृत्तियों की पहचान और स्वचालित समाचार-निर्माण संभव हुआ है। वित्त, खेल और मौसम जैसे संरचित समाचार क्षेत्रों में एआई आधारित सिस्टम कार्यकुशलता बढ़ा रहे हैं और संसाधनों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित कर रहे हैं।

फैक्ट-चेकिंग के क्षेत्र में भी एआई की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही है। फेक न्यूज और दुष्प्रचार के दौर में मशीन लर्निंग मॉडल संदिग्ध सूचनाओं की पहचान कर पत्रकारिता की विश्वसनीयता को मजबूत कर सकते हैं। यह पत्रकारिता के नैतिक पक्ष को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

हालांकि, एआई के साथ गंभीर चुनौतियां भी जुड़ी हैं। एल्गोरिद्मिक पक्षपात, सूचना की जवाबदेही और पारदर्शिता जैसे प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यदि एआई द्वारा प्रस्तुत सामग्री त्रुटिपूर्ण हो, तो उत्तरदायित्व किसका होगा—यह अभी भी एक खुला प्रश्न है। इसके अलावा डीपफेक तकनीक ने दृश्य-श्रव्य प्रमाणों की विश्वसनीयता को चुनौती दी है, जिससे सामाजिक और राजनीतिक दुष्प्रभावों की आशंका बढ़ी है।

पत्रकारों की भूमिका भी बदल रही है। अब उनसे केवल सूचना-संकलन नहीं, बल्कि डेटा समझ, तकनीकी दक्षता और नैतिक विवेक की अपेक्षा की जा रही है। खोजी पत्रकारिता, मानवीय संवेदना और मूल्यबोध जैसे तत्व आज भी मानवीय हस्तक्षेप पर निर्भर हैं।

निष्कर्षतः

पत्रकारिता में एआई का प्रभाव बहुआयामी है। भविष्य की पत्रकारिता मानव और तकनीक के संतुलित सहअस्तित्व पर आधारित होगी, जहां एआई एक साधन होगी और मानवीय चेतना उसका मार्गदर्शक। यही संतुलन पत्रकारिता के मूल उद्देश्य—सत्य का अन्वेषण और समाज का जागरण—को सुरक्षित रख सकेगा।

जल संरक्षण जल ही जीवन है

कवयित्री अंजलि शिशोदिया
भारत वंदन न्यूज़

(1) क्यूँ बहाए व्यर्थ ही,जल है सुधा समान।
पानी है तो जीव है कहते संत महान।।

(2) पानी कहता आपसे खत्म करे क्यों मोय।
एक दिन ऐसा आयेगा प्यासो मारूं तोय।।

(3) बूंद बूंद को तरोसोगे जब हो सूखे का कहर।
जीरो डे पर आ गए भारत के कई शहर।।

(4) खाली धरे रह जाएंगे बने जो स्विमिंग पूल।
प्यास बुझाने की नौबत में लोगे तुम कैप्सूल।।

(5)पानी पानी सब करे संचय करे ना कोय।
एक बूंद के मूल्य को जाने सो विरलय होय।।

(6) कल समझे तो आज समझ जल कितना अनमोल।
नीर खत्म हो जाए तो मिले ना कोई मोल।।

(7) जल दोहन जो भी करे,ना देश भक्ति का भाव।
भूजल स्तर है गिरा,अन्न कहां से खाय।।

(8) नदी नाले और झील कुएं, सूखे पड़े तालाब।
जीवन का आधार जल,क्यों करते बर्बाद।।

(9) जल संचय करने का मित्रो हम सबका है फर्ज।
आने वाले पीढ़ी को वरना दोगे कर्ज।।

(10) निभाई ना गर जिम्मेदारी परिणाम भयंकर
पाओगे। निज संतति के लिए जल कहां से लाओगे।।

ARYA VARTT PUBLIC SCHOOL

C.B.S.E Affiliated Senior Secondary School (Nur -XII)

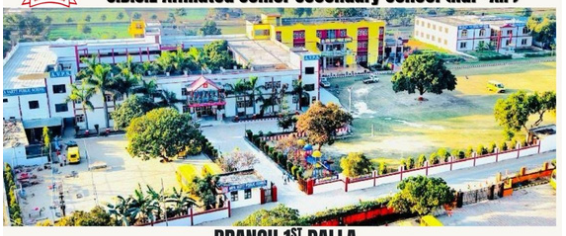

BRANCH 1ST PALLA

ADMISSION OPEN FOR 2026-27

Discipline, Dedication aur Determination – hamari pehchaan.

OUR FEATURES

- Certified Teachers
- All Science Laboratories
- Computer Laboratory
- Library
- ATL Laboratory
- Extra Focused on weak Students
- Affordable Fee Structure
- Big Playground
- Art & Craft Class
- Dance Class
- CCTV Camera Security

Email:-principalavpspalla@gmail.com 9717984681

Affiliation no :-2132449

ARYA VARTT PUBLIC SCHOOL

C.B.S.E Affiliated Senior Secondary School (Nur onwards)

ADMISSION OPEN 2026-27

Hamare school mein sirf padhai nahi, sanskaar bhi sikhaye jaate hain.

Branch 2nd Dadri

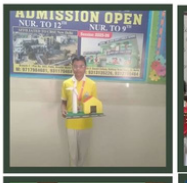

SCHOOL FACILITIES :

- Certified Teachers
- All Science Laboratories
- Computer Laboratory
- Extra focused on weak students
- Affordable Fee Structure
- Big Playground
- Art Class

Contact no:-+91 93131 35226 Email:-principalavpsdadri@gmail.com

Affiliation no:-2132449

ARYA VARTT PUBLIC SCHOOL

C.B.S.E Affiliated Senior Secondary School (Nur onwards)

ADMISSION OPEN 2026-27

Branch 3rd Delva

Our Facilities :

- Affordable Fee Structure
- All Science Laboratories
- Computer Laboratory
- Library
- Big Playground
- ATL Laboratory
- Medical Room
- Music Room
- Auditorium
- Art Room
- Library

About School

Discipline, dedication, and determination – our foundation of success.

Email:-principalavpsDevla@gmail.com Contact no:-+91 97179 84681

S.S.ARYA BALIKA DEGREE COLLEGE

Affiliated to C.C.S University,Meerut,U.P

Only for Girls

Transforming potential into professional excellence.

Bachelor of Arts

- History
- Economics
- Drawing & Painting
- Political Science
- Sociology
- Hindi
- English

Contact Us Phone Number - 9313135226

ssaryabalikadegreecollege@gmail.com

MR. UDAY PRAKASH ARYA (CHAIRMAN)

ARYA VARTT PUBLIC SCHOOL

बुजुर्ग, बच्चे और लापरवाही का दंश, तरक़्क़ी के शोर में दबती इंसानियत

विक्की भाटी
भारत न्यूज़ 17

आज का समय बेहद तेज़ी से बदल रहा है। काम, नौकरी, पढ़ाई और सोशल मीडिया की दौड़ में हम इतने व्यस्त हो गए हैं कि अपने घर के सबसे संवेदनशील सदस्यों—बुजुर्गों और बच्चों—की ओर ध्यान देना भूलते जा रहे हैं। ये दोनों ही जीवन के ऐसे पड़ाव पर होते हैं, जहाँ उन्हें सबसे अधिक स्नेह, समय और सुरक्षा की आवश्यकता होती है। लेकिन उपेक्षा और लापरवाही का दंश न सिर्फ़ उन्हें, बल्कि पूरे परिवार और समाज को भीतर से खोखला कर रहा है।

बुजुर्ग: अनुभव का खजाना, अकेलेपन का शिकार

बुजुर्ग हमारे परिवार की नींव होते हैं। उनके अनुभव, त्याग और संघर्षों पर ही आज की पीढ़ी खड़ी है। बावजूद इसके, आधुनिक जीवनशैली में कई बुजुर्ग अकेलेपन और उपेक्षा का सामना कर रहे हैं। बच्चों की नौकरी, व्यवसाय या पढ़ाई के कारण वे अक्सर घर में अकेले रह जाते हैं।
कई बार उन्हें बोझ समझ लिया जाता है। समय पर दवा न देना, डॉक्टर के पास न ले जाना या उनकी बातों को अनसुना करना उनकी भावनाओं को गहरी चोट पहुँचाता है। धीरे-धीरे अकेलापन, असुरक्षा और उदासी उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर असर डालने लगती है। जिन हाथों ने परिवार को संभाला, वही हाथ आज सहारे के लिए तरसते दिखाई देते हैं।

बच्चे: मासूमियत पर छाई लापरवाही

बच्चे किसी भी समाज का भविष्य होते हैं। उनका मन कोमल और संवेदनशील होता है, जिसे सही दिशा, संवाद और स्नेह की ज़रूरत होती है। लेकिन व्यस्त जीवन के कारण कई माता-पिता अनजाने में बच्चों को अकेलेपन की ओर धकेल रहे हैं।

आज अक्सर बच्चों को टीवी, मोबाइल या वीडियो गेम के सहारे छोड़ दिया जाता है ताकि वे "व्यस्त" रहें। इसका सीधा असर उनके मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास पर पड़ता है। कई बच्चे अपनी बातें साझा नहीं कर पाते, भीतर ही भीतर घुटते रहते हैं और कभी-कभी गलत दिशा में चले जाते हैं। केवल पैसा, महंगे स्कूल या खिलौने बच्चों को खुश नहीं रख सकते—उन्हें माता-पिता का समय, संवाद और मार्गदर्शन चाहिए।

समाधान: संवेदनशीलता और जिम्मेदारी

समाधान केवल सुविधाएँ देने या औपचारिक देखभाल तक सीमित नहीं है। यह हमारी सोच और संवेदनशीलता से जुड़ा सवाल है। जब हम बुजुर्गों को सम्मान, सुरक्षा और संवाद देंगे, और बच्चों को समय, प्यार और सही मार्गदर्शन देंगे, तभी एक संतुलित और स्वस्थ समाज की नींव पड़ेगी। यह केवल पारिवारिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हमारी इंसानियत की कसौटी है।

निष्कर्ष

बुजुर्ग और बच्चे समाज की रीढ़ हैं। यदि हम उन्हें समय, सम्मान और स्नेह देंगे, तो परिवार मजबूत होंगे और समाज स्वस्थ बनेगा। लापरवाही केवल उन्हें नहीं, बल्कि पूरे सामाजिक ताने-बाने को नुकसान पहुँचाती है। ज़रूरत है कि हम अपनी व्यस्तता के बीच रिश्तों के लिए जगह निकालें और संवेदनशील बनें। यही सच्ची प्रगति,

गुर्जर एकता जिन्दाबाद

'शिक्षित हो' 'संगठित हो' 'संघर्षशील हो'

यही हमारा नारा है

अखिल भारतीय गुर्जर महासभा द्वारा

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

बनाये जाने पर

हार्दिक अभिनन्दन

भारत के दो चेहरे – इंडिया और भारत

सोनू नागर
रैपिड 24

क्या आपने कभी सोचा है कि एक ही देश में दो अलग-अलग देश कैसे बस सकते हैं? एक तरफ़ इंडिया—जिसमें चमचमाते शहर, तेज़ इंटरनेट, मॉल और मेट्रो हैं; दूसरी तरफ़ भारत—जहाँ अब भी किसान सूखे खेतों में मेहनत कर रहा है, जहाँ बच्चे स्कूल की बजाय ढोर चरा रहे हैं। यही है आज का भारत, एक राष्ट्र लेकिन दो हकीकतों में बँटा हुआ।

भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है। यहाँ की लगभग 65 से 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में रहती है और उनकी आजीविका का मुख्य साधन खेती है। लेकिन विडंबना यह है कि देश की जीडीपी में कृषि का योगदान लगातार घटकर 16 प्रतिशत के आसपास आ गया है। इसका मतलब यह है कि जो तबका देश को भोजन देता है, वही सबसे कम हिस्सा पाता है।

दूसरी ओर देखते हैं तो शहरी इंडिया आईटी, एआई और सेवा क्षेत्र में विश्वस्तर पर उभर रहा है। देश के 10 प्रमुख शहर भारत की कुल अर्थव्यवस्था में लगभग 60 प्रतिशत का योगदान देते हैं। लेकिन गाँवों में आज भी 35 प्रतिशत घरों में इंटरनेट तक की सुविधा नहीं पहुँची। एक तरफ इंडिया डिजिटल इंडिया के सपने को साकार कर रहा है, तो दूसरी तरफ भारत अब भी अपने राशन के लिए सरकारी डिपो के बाहर लाइन में खड़ा है।

कोविड-19 महामारी के बाद सरकार ने मुफ्त राशन की योजना बढ़ाई, जिससे 80 करोड़ से अधिक लोगों को अनाज मिला। यह कदम ज़रूरी था, पर इसके साथ ही एक सवाल भी उठता है—क्या हम आत्मनिर्भर बन रहे हैं या सहायता पर निर्भर? जब देश के इतने बड़े हिस्से को दो साल तक मुफ्त राशन की ज़रूरत पड़ी, तो कहीं न कहीं यह संकेत देता है कि हमारी विकास यात्रा सभी को समान रूप से नहीं मिला पाई है।

अब जब हम 2047 के विकसित भारत का सपना देख रहे हैं, तो यह पूछना ज़रूरी हो जाता है—क्या सिर्फ आर्थिक आँकड़ों की वृद्धि ही विकास है? या फिर यह भी देखना होगा कि उस विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचा या नहीं? प्रधानमंत्री ने अक्सर कहा है कि "अंत्योदय" यानी सबसे नीचे के व्यक्ति का उत्थान ही असली विकास है। लेकिन जब तक गाँवों के स्कूलों, अस्पतालों और खेतों की हालत नहीं सुधरती, तब तक भारत और इंडिया के बीच की यह दूरी बनी रहेगी।

आज भी देश के 6.5 लाख गाँवों में से बड़ी संख्या ऐसे हैं जहाँ रोजगार के नाम पर खेतों की मौसमी दलाली और मनरेगा ही मुख्य साधन है। वहीं शहरों में हर दिन नए स्टार्टअप बन रहे हैं, करोड़ों की फंडिंग मिल रही है और नई टेक्नोलॉजी के ज़रिए नौकरियाँ पैदा हो रही हैं। यह विषमता सिर्फ आर्थिक नहीं, सामाजिक भी है। इसी असमानता के कारण आज देश के भीतर 'माइग्रेशन बेल्ट' बन गए हैं—जहाँ लाखों श्रमिक गाँव छोड़कर शहरों की ओर निकल जाते हैं।

भारत और इंडिया के इस अंतर को मिटाना केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज की साझी जिम्मेदारी है। हमें अपने गाँवों को तकनीक, शिक्षा और स्वास्थ्य के माध्यम से सशक्त करना होगा। गाँव और शहर के बीच के पुल को नीतियों और भागीदारी से जोड़ा जा सकता है। यदि भारत का किसान मजबूत होगा, तो इंडिया का बाजार भी स्थिर रहेगा।

का सपना तभी साकार होगा जब हम यह स्वीकार करें कि कोई भी देश अपने कमजोर हिस्से को पीछे छोड़कर विकसित नहीं बन सकता। असली आज़ादी तब होगी जब हर गाँव, हर खेत, हर बच्चा शिक्षा और अवसर से जुड़ेगा। भारत की मिट्टी में ही वह ताक़त है जो इंडिया को आगे बढ़ा सकती है — बस ज़रूरत है उस दोनों के बीच की दीवारों को तोड़ने की।

भारत कैसे बनेगा विश्वगुरु

हरवीर सिंह
वेदांत करंट न्यूज़

शिक्षा से वंचित रहना विश्व गुरु भारत बनाने में सबसे बड़ी चुनौती जानेंगे आज भारत की साक्षरता दर 2011का आंकड़ा 67.68 % से बढ़कर 72.60 वृद्धि अनुपात4.9 फिर सत प्रतिशत होने में 27% रहे कैसे पीछे शिक्षा से का मुख्य कारण माता-पिता का अशिक्षित या अज्ञान होना बच्चों के जन्म के बाद बच्चों के रिपोर्ट कार्ड आंगनबाड़ी कार्ड इत्यादि को संभाल कर नहीं रखना या कमाने के चक्कर में दूसरे शहर आ जाना के कारण जन्म प्रमाण पत्र बनवाने में जरूरी कागजी प्रक्रिया के अभाव से आधार कार्ड नहीं बन पाना जिससे माध्यमिक विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं अर्थात बिना आधार कार्ड शिक्षा से वंचित रहना जो वह बच्चे आज तक भी दर-दर भटक रहे हैं इसमें बेटी और बेटा दर दोनों बराबर है इसका परिणाम बहुत घातक होगा जो विश्व गुरु बनाने में तिनके तक का सहारा नहीं मिलेगा शिक्षा व्यवस्था की खामियों को अब डर में जीने लगे, तो यह न सिर्फ़ उस व्यक्ति के लिए बल्कि पूरी पत्रकारिता के लिए चिंता का विषय है। सम्मान की बात करें तो पत्रकारों को शब्दों में तो लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, लेकिन व्यवहार में अक्सर यह सम्मान दिखाई नहीं देता। जब कोई पत्रकार सवाल पूछता है, तो उसे परेशान करने वाला समझ लिया जाता है। जब वह जवाब मांगता है, तो उस पर पक्षपाती होने का आरोप लग जाता है। असल सम्मान तब होगा जब सवाल पूछना अपराध न समझा जाए, सच दिखाने पर विरोध ट्रांसपेरेंट करते हैं दूसरे पड़ाव में जो माध्यमिक स्कूल में जो टीजीटी पीजीटी और uptet सीटेट वेल क्वालिफाइड टीचर है और वेतन भी काफी बड़े स्केल पर भारत सरकार से वेतन भोगी है के छात्रों का पढ़ाई स्तर और प्राइवेट संस्थान में पढ़ने वाले बच्चों का जो अध्यापक मात्र ₹20000 सैलरी में छात्रों को शिक्षा देता है उन प्राइवेट छात्रों का स्तर कई गुना आगे है जिसका प्रमाण स्वयं वेतन भोगी पदाधिकारी से प्रमाणित होता है क्योंकि यदि स्तर अच्छा होता तो उनके बच्चे भी इसी स्कूल में क्यों नहीं पढ़ते अर्थात भारत सरकार द्वारा पढ़ने वाले बच्चे ही आगे चलकर विश्व गुरु भारत बनने में सबसे बड़ी बाधा बनेंगे और वही बच्चे आरक्षण की डोर से अपना भविष्य तय करेंगे और वर्ण व्यवस्था लोगों के आचार्य विचार भी अलग कर देगी जो देश को दिया नारा हिंदू मुस्लिम सिख इसाई हम चारों हैं भाई-भाई का नारा निरर्थक हो जाएगालोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक है। जब एक पत्रकार बिना डर के लिख पाएगा, तभी समाज सच को पूरी सच्चाई के साथ पढ़ पाएगा। पत्रकार सुरक्षित है, तभी समाज वास्तव में सुरक्षित है।

Green City Hospital

(A unit of AAR AAR Medical Service Pvt. Ltd.)

On Panel :

ALL TPA'S & INSURANCE CAPF, CGHS, GIPSA, ESIC, DELHI POLICE, GREATER NOIDA AUTHORITY

डॉ. रविन्द्र कुमार वर्मा
CMD

+ ACCIDENT EMERGENCY & TRAUMA UNIT
+ ICU (INTENSIVE CARE UNIT) WITH VENTILATOR
+ NICU WITH PEDIATRIC & NEONATAL VENTILATOR
+ HIGH DEPENDENCY UNIT

DEPARTMENT

+ GENERAL SURGERY
+ INTERNAL MEDICINE
+ GYNAECOLOGY & OBSTETRICS
+ PEDIATRICS
+ ORTHOPEDICS
+ OPHTHALMOLOGY
+ DERMATOLOGY
+ GASTROENTEROLOGY
+ DIALYSIS UNIT
+ PATHOLOGY
+ RADIOLOGY
+ MICRO BIOLOGY
+ PHYSIOTHERAPY
+ UROLOGY
+ NEURO SURGERY
+ DENTAL
+ ANAESTHESIA & CRITICAL CARE
+ ENT (EAR, NOSE & THROAT)

INVESTIGATION FACILITIES

ECG | TMT | ECHO | COLOR DOPPLER | CT SCAN | PFT
DIGITAL X-RAY | ULTRASOUND | ARTHROSCOPY | ENDOSCOPY

Fully Automated Pathology Lab, Pharmacy & Ambulance Service
Add.: NH-17, Delta-1, Greater Noida

Helpline No.:
9711960840, 0120-2320260, 261

Pawan Bansal 9311320045
Madhav Bansal 8178975890
Keshav Bansal 9412312527

SHIVAM MARBLES

UNIVERS OF MARBLES LEADING BRAND

Deals in:

All Kinds of Marbles Stone, Marble Chips
Kota Stone, Granite, Tiles, Cement & Marble Powder

Near Bhagwati Nursing Home,
Railway Road, Dadri (G.B. Nagar)

तरक्की की दौड़ में पीछे छूटता इंसान

बॉबी भाटी
बीबी न्यूज़ 17

आज का समय बहुत तेज़ है। हर कोई आगे बढ़ना चाहता है, ज्यादा कमाना चाहता है, बड़ा घर, अच्छी गाड़ी और नाम कमाना चाहता है। देश तरक्की कर रहा है, शहर बढ़ रहे हैं, नई-नई तकनीक आ रही है। मोबाइल, इंटरनेट और मशीनों ने जिंदगी को आसान तो बना दिया है, लेकिन इसी तरक्की की दौड़ में कहीं न कहीं इंसान खुद पीछे छूटता जा रहा है।

आज लोग सुबह से रात तक काम में लगे रहते हैं। ऑफिस की टेंशन, बिजनेस का दबाव, पढ़ाई की प्रतियोगिता — हर तरफ सिर्फ भागदौड़ है। पहले लोग एक-दूसरे के साथ बैठकर बात करते थे, हाल-चाल पूछते थे, लेकिन अब ज्यादातर बातें मोबाइल पर ही हो जाती हैं। एक ही घर में रहने वाले लोग भी एक-दूसरे से कम और स्क्रीन से ज्यादा जुड़े हुए हैं। रिश्तों में पहले जैसी गर्माहट कम होती जा रही है। तरक्की का फायदा हर किसी को बराबर नहीं मिल रहा। शहरों में बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी हो रही हैं, लेकिन उन्हीं इमारतों के पीछे झुग्गियों में रहने वाले लोग भी हैं, जिनकी जिंदगी में ज्यादा बदलाव नहीं आया। कोई ऊँची सैलरी पा रहा है, तो कोई आज भी रोज़गार के लिए दर-दर भटक रहा है। अमीर और गरीब के बीच की दूरी कम होने के बजाय और बढ़ती जा रही है।

गांवों की हालत भी पूरी तरह नहीं बदली है। कई किसान आज भी मौसम पर निर्भर हैं। मेहनत करने के बाद भी उन्हें सही दाम नहीं मिल पाता। युवा बेहतर जिंदगी की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। शहरों में भी उन्हें हमेशा स्थायी काम नहीं मिलता। इस तरह तरक्की की चमक के पीछे संघर्ष की सच्चाई छिप जाती है।

सबसे बड़ी बात यह है कि लोग मानसिक रूप से भी थकते जा रहे हैं। हर किसी को दूसरों से आगे निकलना है। तुलना की इस आदत ने शांति छीन ली है। सोशल मीडिया पर दिखने वाली चमक-दमक देखकर लोग अपनी जिंदगी से असंतुष्ट होने लगे हैं। तनाव, चिंता और अकेलापन धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं। बाहर से सब कुछ अच्छा दिखता है, लेकिन अंदर से इंसान टूट रहा होता है।

शिक्षा और कौशल की भी बड़ी समस्या है। आज वही आगे बढ़ रहा है जिसके पास नई तकनीक का ज्ञान है। जिनके पास अच्छी शिक्षा या संसाधन नहीं हैं, वे पीछे रह जाते हैं। इससे समाज में असमानता और बढ़ती है। हर किसी को बराबर मौका नहीं मिल पाता। पर्यावरण भी इस दौड़ की कीमत चुका रहा है। पेड़ कट रहे हैं, प्रदूषण बढ़ रहा है, नदियां गंदी हो रही हैं। हम विकास तो कर रहे हैं, लेकिन प्रकृति को नुकसान पहुंचाकर। आने वाली पीढ़ियों के लिए क्या बचेगा, इस बारे में कम लोग सोचते हैं।

तरक्की बुरी बात नहीं है। आगे बढ़ना हर इंसान और हर देश का सपना होता है। लेकिन अगर इस दौड़ में इंसानियत, रिश्ते, सुकून और बराबरी पीछे छूट जाएं, तो ऐसी तरक्की अधूरी है। असली विकास वही है जिसमें हर व्यक्ति को सम्मान मिले, हर किसी को अवसर मिले और जीवन में संतुलन बना रहे।

आज जरूरत इस बात की है कि हम रफ्तार के साथ-साथ दिशा पर भी ध्यान दें। सिर्फ आगे बढ़ना ही काफी नहीं है, यह भी जरूरी है कि हम किस दिशा में बढ़ रहे हैं। अगर हम संवेदनशीलता, सहयोग और इंसानियत को साथ लेकर चलें, तभी तरक्की सही मायने में सफल होगी। वरना एक दिन ऐसा आएगा जब हमारे पास सब कुछ होगा — पैसा, साधन, तकनीक — लेकिन सच्चे रिश्ते, सुकून और खुशियां कहीं पीछे छूट चुकी होंगी।

निष्कर्ष

अंत में यही कहा जा सकता है कि तरक्की जरूरी है, लेकिन इंसान से बढ़कर कुछ भी नहीं। अगर विकास की इस दौड़ में रिश्ते कमजोर पड़ जाएं, मानसिक शांति खत्म हो जाए और समाज में असमानता बढ़ती जाए, तो ऐसी तरक्की अधूरी है। सच्चा विकास वही है जिसमें हर व्यक्ति को बराबर अवसर मिले, जीवन में संतुलन हो और इंसानियत बनी रहे। हमें केवल आगे बढ़ने की नहीं, बल्कि सबको साथ लेकर आगे बढ़ने की जरूरत है। तभी तरक्की का असली मतलब पूरा होगा और कोई भी इस दौड़ में पीछे नहीं छूटेगा।

झलकियाँ

ग्रेटर नोएडा जर्नलिस्ट प्रेस क्लब
द्वारा
मुक्त स्वर

ग्रेटर नोएडा जर्नलिस्ट प्रेस क्लब
मुक्त स्वर

spykke

RAO KASAL PUBLIC SCHOOL

Salient features:-

- ✓ As per NEP 2020, follows (ECCE) Early Childhood care and Education (Nur- Class ll)
- ✓ No bag Policy, No Home Work (Class Nur to ll)
- ✓ lT/Tv's enabled Class Rooms.
- ✓ Learning through Art & Craft integration.
- ✓ Child Centered Multifaceted Learning Frame Work.
- ✓ Learn by Activities (lndoor and Outdoor Play)

ADMISSION OPEN 2026-27

Address- State Bank Raod, UPSIDC SITE-V, Kasna, Gr. Noida

Contact: 7838957060, 9267991184

Website: www.raokasalpublicschool.org | Email:rkpsgrnoida9045@gmail.com

द्वारा

मुक्त स्वर
यमुना एक्सप्रेसवे
औद्योगिक विकास प्राधिकरण

मुक्त स्वर
पत्रिका विमोचन कार्यक्रम में आपका हार्दिक स्वागत

ग्रेटर नोएडा जर्नलिस्ट प्रेस क्लब
द्वारा
मुक्त स्वर
पत्रिका विमोचन कार्यक्रम में आपका हार्दिक स्वागत

ग्रेटर नोएडा जर्नलिस्ट प्रेस क्लब
मुक्त स्वर

स्वैच्छिक रक्तदान करें और स्वस्थ समाज एवं देश का निर्माण करें।

Owned Oxygen Generation Plant To Support Critical Patient

Contact For Blood & Blood Components
0120-3264107
24 Hrs. open

Thanks You For Giving Us The Opportunity To Serve You Better Fo The Past 20 Years.
- Dr Richa Tyagi

Our Departments

- Blood Centre (24 Hrs. open)
- Medicine
- Obstetrics and Gynaecology
- Immunization Clinic
- Physiotherapy & Rehabilitation
- Ortho
- Radiology
- Pathology
- Surgery
- Pediatrics
- ENT
- Eye
- NICU With Warmer & Ventilator
- ICU
- Dental
- Dermatology
- TPA
- Medical Store (24 Hrs. open)

FEATURES & FACILITIES OF OUR HOSPITAL

1 Hospital Was Founded In 2004 By Qualified Group Of Doctor And Trained Staffs.
2 100-bedded Multispeciality Hospital
3 Cheapest OPD/IPD In Greater Noida
4 Focus On Normal Delivery
5 Well Equipped Labour Room For Delivery
6 24 Hrs. Power Back-up
7 Canteen For OPD/IPD Patient And Their Attendents/Visitors.
8 We Accept All Debit & Credit Card.
9 Free Health Cheak Up And Awarness Programme.
10 Pre School Health Cheak Up For Corporate.
11 Pre Post Health Cheak Up For Corporate
12 Tpa Assitance Desk.
13 Empaneled With Good Tpas, Insurance Compaines & Corporate
14 Key Hole/Laproscopic Surgery
15 You May Contact For Corporate Empanelment & Health
16 Facilities For MTP (Ultrasound Guided) Family Planning Operations
17 Well Equipped Nursery With Warmers, Phitotherapy And Immunization Clinic
18 Well Equipped OT
19 ICU/NICU Functioning By A Experienese Doctors
20 For Impatients All Type Of Room Available
21 Day Care And Emergency Beds Available
22 Advanced Dental Care Unit, Physiotherapy ENT & Eye Care Dept
23 Computerized Lab With Analyzer, Digital X-Ray And Latest Ultrasound Machine
24 24 Hrs. Blood Centre, Medical Store & Investigations Department Open
25 Round The Clock, Doctors/RMOS/N Staff And Ambulance Available

VISIT OUR BLOOD CENTRE DONATE BLOOD & SAVE LIFE

Shri Krishna Life Line Hospital Pvt. Ltd
NH-22D, Sector-Tau, Swarn Nagri, G.B. Nagar, Greater Noida, UP
Ph: 0120-3286724 (Reception)
8588876001 (For OPD Appointment)
8588876004 (For Enquiry)

GREATER NOIDA JOURNALIST PRESS CLUB

GREATER NOIDA JOURNALIST PRESS CLUB

GREATER NOIDA JOURNALIST PRESS CLUB

आत्मनिर्भर भारत
प्रेस वार्ता

GREATER NOIDA JOURNALIST PRESS CLUB

GREATER NOIDA JOURNALIST PRESS CLUB

होली की हार्दिक शुभकामनाएं
विजय सिंह पथिक इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ
दादरी, गौतम बुद्ध नगर
विजय सिंह पथिक
भगतराम
अध्यक्ष
09313283304
बचन भाटी
कोषाध्यक्ष
9350910064
पौरुष भाटी
उप सचिव
08700459579

GNIOT
GROUP OF INSTITUTIONS
2001
25
NBA
Transforming Students Into Industry Ready Professionals
PACKAGE SNIPPET HIGHLIGHTS
Average Package
7.75 LPA
Highest Package (Domestic)
27.25 LPA
Highest Package (International)
70.00 LPA
#ImpeccablePlacements
Sanjay Singh 27.61
Anup Yadav 27.00
Tipu Sakia 23.20
Shraddha Sharma 22.00
Shadab Ali 15.60
Md. Irfan 15.00
& Many More Placed with Pride...
20500+ Proud Alumni
11900+ Placements
10000+ Students
510+ Faculty
OUR ALLIANCES
coursera
NHRD
AIMS
XLRI
ISO
BFSI
DCAL
AAA+
12
09
THE WEEK
20
THE WEEK
BEST B-SCHOOL FOR EMPLOYABILITY
Deloitte.
KANSAI NEROLAC
Nestle
ANZ
infoedge
croma
IBM
Berger
NEC
accenture
BARCLAYS
HCL
cognizant
Radisson
ADMISSIONS OPEN 2026
Engineering | Management | Commerce
Computer Applications | Nursing | Pharmacy | Law
GNIOT | GNIOT | GIPS | GIMS | GIMSAR | GNALSR | GNIPER
Plot No. 7, Knowledge Park II, Greater Noida, Uttar Pradesh - 201310
www.gniotgroup.edu.in | 1800-274-6969

Press Club Members

Name	Contact	Organization
Narendra Bhati	9999328081	Jantantra TV
Nitin Sharma	8860008477	CITY WEB
Kailash Chand	9810432277	Swaraj express
Pranav Bhardwaj	7505183438	The US Journey
Kapil Choudhary	9810402764	Noida Views
Sandeep Ojha	8447512180	Now Noida
Sonu Nagar	9990900404	Rapid24 News
Brajesh Tiwari	9717667127	Zee News
Ashish Jauhari	9717794888	Sahara tv
Himanshu Dwivedi	9953158401	Zee news
Sourabh Chaturvedi	9650298503	India tv
Abhishek Kumar	9818135835	Zee news
Shish Pal Singh	8700991440	Jan satta
Tahir Saifi	9871079084	Times now
Nand Gopal Verma	9760010870	Buland Sandesh
Sanjay Kumar Bhati	9810204400	CITY WEB
Sandeep Kumar	9873740108	Khas Awaj
Sunil Sharma	9953272625	Hindustan
Deepak Singhal	9760281573	Amar ujala
Mohmmad Arif	8010094120	Bebak Awaz
Ashok Chhonkar	9759698244	Dainik Hindustan
Dr. Deepak sharma	7827058222	Noida Views
Anil Gupta	9871077644	Amar Bharti
Mohit Adhana	8368793374	Sanchar Now
Vikash Shishodia	8527063285	India republic
Manoj Kumar	8171486801	Future line times

Name	Contact	Organization
Devendra Bhati	9958109866	GBN Express News
Pranshul Goyal	9557860956	Zee news
Jitendra Singh Sisodiya	9999855569	NCR Live
Asad Farqi	7417415372	NBT
Inam-ul-haqi farqi	9411671646	Rastriya Sahara
Shashank Agarwal	9205362959	Rashtriya Dharohar
Harveer Singh	9718976101	Vedant Current News
Ajay Kumar	9634019002	Sudarshan News
Sunder Lal Sharma	9999327002	Sudarshan khoj
Gaurav Sharma	9654135370	Sudarshan Tv
Sunil Kumar	9540141817	Sach Kahoon
Sanjay Kumar	9971696210	Ugata Bharat
Bharat Bhushan Sharma	9871493277	Face Varta
Bobby Bhati	8750151722	BB News 17
Vikky Bhati	9718931722	Bharat News 17
Deepak kr. Sharma	9837017406	Amar ujala
Aaditya Vikaram Singh	9311418712	Mukhya Awaz
Anjali Shisodiya	9560538878	Bharat Vandan News
Ankush Nagar	9528009594	Hind Focus
Damodar Rajout	9756141388	Kanoon Review
Shivam Mavi	8368109678	Hindi Nyay Apka
Mujaffar Ali	7838706111	Nation24 News
Nirmal Gaur	8859815620	Now Noida
Praveen Kumar	9911999415	Vidhan Keshri
Shubham Pathak	7906831405	Rapid 24 News
Arun Tyagi	9555392008	Aajtak
Gyanendra	9411492655	Deshbandhu
Dinesh Kumar	9318393273	Yug Karwat

GREATER NOIDA JOURNALIST PRESS CLUB
GNJPC

CS - 2, FIRST FLOOR, C BLOCK MARKET, SECTOR - ALPHA 1,
GREATER NOIDA, GAUTAM BUDH NAGAR

www.gnpressclub.com | gnpressclub@gmail. com| @gnpressclub

NABH ACCREDITED

NABL ACCREDITED

YATHARTH
SUPER SPECIALITY HOSPITALS
GET BETTER

YATHARTH SUPER SPECIALITY HOSPITAL

Omega-1, (Near Pari Chowk) Greater Noida

7 LAKH+
Happy Patients

- 400 Beds
- 10 Operation Theaters
- 100 ICU Beds
- 90+ Eminent Consultant
- On Panel of All TPAs | CGHS | ECHS
- NABH | NABL Accredited
- Da Vinci Surgical Robot
- Cuvis Joint Robot System
- Cardiac Advance Cath Lab

OUR CENTRES OF EXCELLENCE

- Centre for Renal Sciences, Robotic Urology & Kidney Transplant
- Centre for Oncology & Bone Marrow Transplant
- Centre for GI-HPB Surgery & Liver Transplant
- Centre for Cardiology and Cardiothoracic Surgery & Vascular Surgery
- Centre for Orthopaedics & Robotic Joint Replacement
- Centre for Neurosciences
- Centre for General, Minimal Access, Robotic & Bariatric Surgery
- Centre for Gynaecology & IVF
- Centre for Paediatrics & Child Development
- Centre for Chest & Respiratory Diseases
- Centre for Plastic & Cosmetic Surgery
- Centre for Ear, Nose & Throat & Cochlear Implant

24x7 SERVICES

Laboratory | Blood Bank
Emergency | Ambulance
Pharmacy | Radiology

CONTACT US

8800447777
8826447777

Free Ambulance Service*
1800 330 0000

YATHARTH GROUP OF HOSPITALS: 8 HOSPITALS | 2550+ BEDS | 900+ DOCTORS

Greater Noida	Noida	Noida Extension	Jhansi-Orchha	Faridabad (Sec-88)	New Delhi	Faridabad (Sec-20)	Agra
				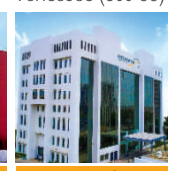	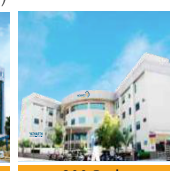	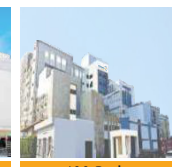	
400 Beds	250 Beds	450 Beds	305 Beds	200 Beds	300 Beds	400 Beds	250 Beds

Ideal atmosphere for multifacted growth

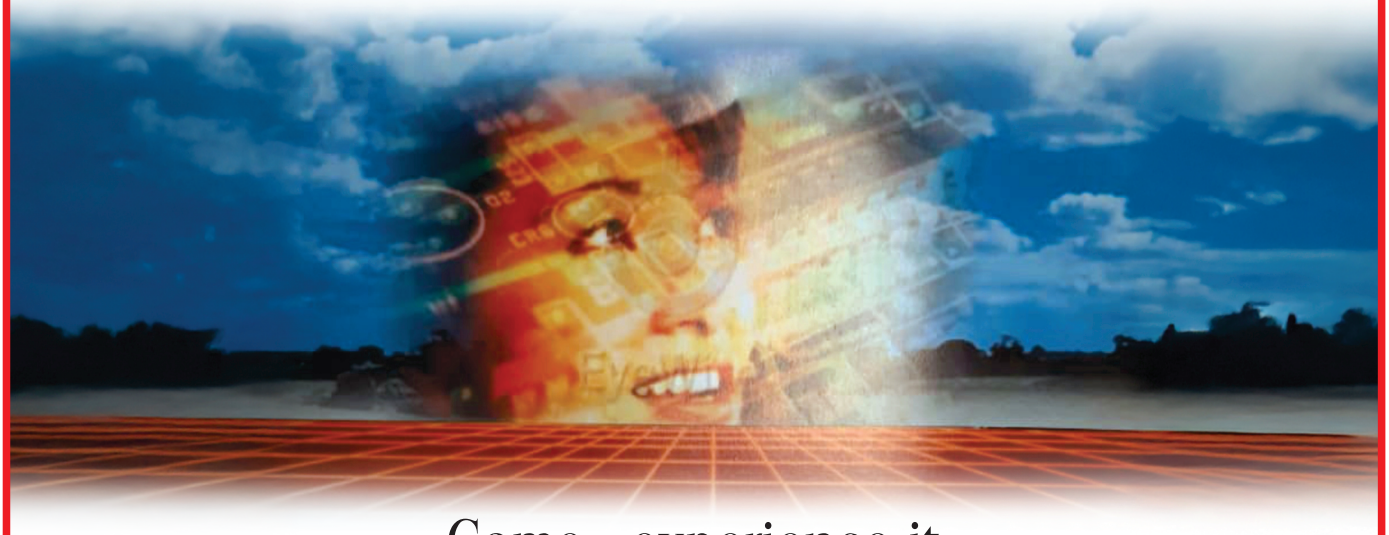

Come... experience it

Not just industry. Also commerce, institutions, living, education, sports, health, leisure, retail. Even the latest culturaland arts centres. In Greater Noida, it's all world class. And within reach, Enveloped in an atmosphere that's pollution free- amid growing greeners. Underlining holistic standards of living.

Facets of Greater Noida

Excellent Connectivity: • In proximity of two national and two state highways • Approachable from two 6-lane expressway • Intersection of Eastern and Western Freight Corridors • 20mins from proposed Jewar International Airport • Two metro lines will connect the city to Delhi and IGI Airport • 50 mins from Indira Gandhi International Airport

Meticulously planned with a host of international level facilities: • Weil-laid sewerage system • Drainage & rainwater harvesting • Water supply network • 24x7 uninterrupted power supply • Convergence network Plan Solid waste management plan

Equipped with robust and modern infrastructure for urban and social sector: • Ecologically Sensitive Areas • Spine of 130 mt. wide road • Ground Water Recharge Areas • Interlinked Greens • Energy efficient design & waste treatment • Solid Waste Management

Ease of doing business with transparency and efficiency: • Nivesh Mitra - A friendly single-window centralised portal & mobile application for investment: **www.niveshmitra.up.nic.in**

Greater Noida has become a showpiece of urban development with well-planned commercial, institutional, industrial residential and other areas of gainful living, employment and investment. Investors in any of a multitude of options have easy access to the Greater Noida Industrial Development Authority and will find that the terms of business are most attractive. Thus, this fast-developing city with a pollution-free environment has become a magnet for those seeking better living, working and investment opportunities.

Greater Noida Industrial Development Authority

Plot No. 01, Knowledge Park-04, Greater Noida 201308, Dist. Gautam Budh Nagar., U.P.

Helpline Center No.: 0120-2336046, 2336047, 2336048, 2336049

Ph.: 0120-2336030-33, E-mail: authority@gnida.in, Website: www.greaternoidaauthority.in

Follow us on

/OfficialGNIDA